महानवमी



देश दर्पण संवाद

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

हम खबर नहीं, आईना दिखाते हैं

इंदौर, मध्य प्रदेश सोमवार 19 अक्टूबर 2026, आश्विन शुक्ल पक्ष अष्टमी, 8-9, 2083,
वर्ष - 1, अंक - 06, पृष्ठ - 8 , मूल्य - रु 2

अपने लेख या सुझाव भेजने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें

खराखरा

18 कैरेट : ₹1,10,890
22 कैरेट : ₹1,35,500
24 कैरेट : ₹1,47,810

सकारात्मक सोमवाररसः

प्रिय पाठकों,
सप्रेमनमस्कार!शुभसोमवार! आज 'देश दर्पण संवाद' का यह छठवां अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। आपके निरंतर प्रेम, स्नेह व विश्वास ने हमारे संकल्प को और अधिक मजबूत किया है, जिसके लिए हम हृदय से आभारी हैं।
यह सप्ताह अत्यंत पावन और ऊर्जा से भरा है, क्योंकि हम शक्ति की आराधना के पर्व 'दुर्गा महानवमी' और असत्य पर सत्य की शाश्वत जीत के प्रतीक 'विजयादशमी' (दशहरा) का उल्लास मना रहे हैं।

गांधीनगर चुनाव परिणामः आम आदमी पार्टी का सूपड़ा साफ, कांग्रेस को संजीवनी या सत्ताधारी दल का दबदबा कायम ?



गांधीनगर : गुजरात की राजधानी गांधीनगर के हालिया स्थानीय निकाय चुनावों ने राज्य की राजनीतिक दिशा के नए संकेत दिए हैं। 'स्वदेशम' के विशेष संस्करण के लिए किए गए इस विश्लेषण के अनुसार, सत्ताधारी दल 'भारतीय जनता पार्टी' ने चौवालीस में से अड़तीस स्थानों पर विजय प्राप्त कर नगर निगम पर अपना अधिकार स्पष्ट रूप से बनाए रखा है। यद्यपि पिछले चुनाव की तुलना में उनके तीन स्थान कम हुए हैं, परंतु उनके मतों की हिस्सेदारी छियालीस प्रतिशत से बढ़कर छप्पन दशमलव छह-चार प्रतिशत हो गई है। इस चुनाव का सबसे बड़ा और चौंकाने वाला संदेश 'आम आदमी पार्टी' के पतन के रूप में सामने आया है। पिछले निकाय चुनाव में एक स्थान जीतने और लगभग बाईस प्रतिशत मत प्राप्त करने वाले इस दल का इस बार खाता तक नहीं खुल सका। उनके मतों का प्रतिशत गिरकर मात्र चार दशमलव तीन-आठ प्रतिशत रह गया है। दूसरी ओर, मुख्य विपक्षी दल 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' ने इस स्थिति का भरपूर लाभ उठाया है। कांग्रेस ने अपने स्थानों की संख्या दो से बढ़ाकर पांच कर ली है और उनकी मत हिस्सेदारी भी अट्ठाईस प्रतिशत से बढ़कर सैंतीस प्रतिशत के पार पहुँच गई है। प्रभाग संख्या छह के सभी चार स्थानों पर कांग्रेस ने शानदार जीत दर्ज की है। इसके अतिरिक्त, एक स्थान पर निर्दलीय प्रत्याशी ने भी विजय प्राप्त की है। राज्य निर्वाचन आयोग के आंकड़ों के अनुसार, इस बार उनसठ दशमलव दो-पांच प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया, जो पिछले चुनाव से लगभग तीन प्रतिशत अधिक है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि विपक्ष के मतों का जो विभाजन पिछले चुनाव में देखा गया था, वह इस बार नहीं हुआ। आम आदमी पार्टी के निराशाजनक प्रदर्शन का सीधा लाभ कांग्रेस के मत प्रतिशत में सुधार के रूप में दिखा है। इसके बावजूद, अड़तीस स्थानों के साथ सत्ताधारी दल का विशाल बहुमत यह सिद्ध करता है कि शहरी क्षेत्रों में उनका प्रभाव और जनसमर्थन अब भी अजेय बना हुआ है। नए महापौर के चयन के साथ ही, इन परिणामों ने आगामी चुनावों के लिए सभी राजनीतिक दलों को अपनी-अपनी रणनीति पर गहराई से पुनर्विचार करने का स्पष्ट अवसर दे दिया है।

पत्रकारिता के उच्च मापदंडों पर खरे उतरने के लिए बप्पा हमें विवेक और शक्ति प्रदान करें, यही हमारी मंगलकामना है। सत्य को सामने लाने की 'देश दर्पण संवाद' की इस नई यात्रा में सुधी पाठकों का स्नेह, समर्थन और विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी बनेगा।

देश दर्पण संवाद
हम ख़बर नहीं, आईना दिखाते हैं

नहीं थमेगी भारत की रफ्तारः रेपो दर में वृद्धि के बावजूद रिजर्व बैंक ने बढ़ाया आर्थिक विकास का अनुमान

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक ने देश की अर्थव्यवस्था को लेकर एक बेहद सकारात्मक और मजबूत तस्वीर पेश की है। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच भारत की विकास यात्रा बिना रुके आगे बढ़ रही है। हालिया मौद्रिक नीति समीक्षा में, रिजर्व बैंक ने महंगाई को नियंत्रित करने के लिए रेपो दर में वृद्धि का सख्त निर्णय लिया है।
लेकिन इसके साथ ही सबसे बड़ी और राहत की खबर यह है कि रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने देश के सकल घरेलू उत्पाद (विकास दर) के अनुमान को भी बढ़ा दिया है। आमतौर पर रेपो दर (जिस दर पर केंद्रीय बैंक अन्य बैंकों को कर्ज देता है) बढ़ने से बाजार में ऋण महंगा होता है, जिससे विकास दर धीमी पड़ने की आशंका रहती है।
लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था के मजबूत बुनियादी ढांचे और घरेलू मांग में लगातार हो रही वृद्धि ने इस धारणा को बदल दिया है। गवर्नर के अनुसार, कृषि क्षेत्र में सुधार, विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) क्षेत्र की मजबूती और सेवा क्षेत्र में निरंतर विस्तार के दम पर भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से दौड़ेगी।
इस फैसले का सीधा अर्थ यह है कि केंद्रीय बैंक मुद्रास्फीति (महंगाई) को तय दायरे में रखने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है, लेकिन वह विकास की कीमत पर ऐसा नहीं कर रहा है। आम आदमी के लिए रेपो दर बढ़ने से गृह ऋण (होम लोन) और वाहन ऋण की मासिक किस्तों में मामूली वृद्धि जरूर हो सकती है, लेकिन लंबी अवधि में विकास दर बढ़ने से बाजार में निवेश बढ़ेगा और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।
यह नीतिगत कदम भारत को दुनिया की सबसे तेज और मजबूत अर्थव्यवस्था बनाए रखने की दिशा में उठाया गया है। यह स्पष्ट संकेत है कि भारत का आर्थिक इंजन अब पूरी क्षमता के साथ दौड़ने के लिए तैयार है।



जनगणना नियमों में बदलाव -अब निजी कर्मचारी भी करेंगे ड्यूटी



नई दिल्ली: केंद्र सरकार ने जनगणना की प्रक्रिया और नियमों में एक बड़ा बदलाव करते हुए इसका दायरा बढ़ा दिया है। अब तक यह जिम्मेदारी मुख्य रूप से सरकारी शिक्षकों के कंधों पर होती थी, लेकिन अब निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षक, बैंककर्मी, सार्वजनिक उपक्रमों (PSU), कंपनियों और ट्रस्टों के कर्मचारी भी जनगणना करते नजर आएंगे।
सरकार ने यह अहम संशोधन मई महीने में बॉम्बे हाई कोर्ट में निजी शिक्षकों की ड्यूटी से जुड़े एक मामले के सामने आने के बाद किया है। इस नए नियम के तहत, अब राज्य सरकारें और केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन नई अधिसूचना जारी करके इन निजी कर्मचारियों को भी जनगणना ड्यूटी पर नियुक्त कर सकेंगे।
इस पूरे अभियान को सुचारू रूप से चलाने के लिए देश भर में लगभग 35 लाख गणनाकर्मियों की तैनाती किए जाने का अनुमान है।

डेटा पूरी तरह सुरक्षित:

निजी क्षेत्र के कर्मचारियों को शामिल किए जाने पर डेटा सुरक्षा के सवाल पर, भारतीय सांख्यिकी सेवा के पूर्व डिप्टी डायरेक्टर जनरल नंदलाल ने स्पष्ट किया है कि इससे सूचना लीक होने का कोई खतरा नहीं है।
उन्होंने बताया कि 2007 की पशु गणना में स्थानीय युवाओं की मदद से गुणवत्तापूर्ण आंकड़े जुटाने का प्रयोग पहले ही सफल हो चुका है। उन्होंने आश्वासन दिया कि जब भी सरकार निजी क्षेत्र से सर्वे करवाती है, तो डेटा की सुरक्षा के लिए बेहद कड़े इंतजाम किए जाते हैं।

भारत और अमेरिका के बीच पहले चरण की ऐतिहासिक ट्रेड डील फाइनल, लीगल ड्राफ्टिंग शुरू



नई दिल्ली। वैश्विक अनिश्चितता के दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था और कूटनीति के लिए इसी हफ्ते एक बेहद राहत भरी और बड़ी खबर सामने आई है।
भारत और अमेरिका ने लंबे समय से लंबित अपने व्यापार समझौते (Trade Deal) के पहले चरण को अंतिम रूप दे दिया है और अब इसका आधिकारिक लीगल ड्राफ्ट तैयार करने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।
इस ऐतिहासिक समझौते से दोनों देशों के बीच व्यापारिक बाधाएं दूर होंगी और भारतीय सामानों के लिए अमेरिकी बाजार के रास्ते और आसान हो जाएंगे।

लॉजिस्टिक्स और एक्सपोर्ट को मिलेगी नई रफ्तार

इस समझौते का सबसे सीधा फायदा भारतीय निर्यातकों (Exporters), विशेषकर कपड़ा, इंजीनियरिंग सामान और कृषि उत्पादों से जुड़े क्षेत्रों को मिलेगा। इसके साथ ही, भारत के ऑटोमोबाइल और पैसेंजर व्हीकल सेक्टर में भी भारी उछाल देखा जा रहा है, जिसकी घरेलू डिस्पैच रिपोर्ट में इस महीने 21.8% की शानदार बढ़त दर्ज की गई है।
आर्थिक जानकारों का मानना है कि यह ट्रेड डील आगामी त्योहारों के सीजन में भारतीय विनिर्माण (Manufacturing) और रोजगार बाजार को एक नई और अभूतपूर्व ऊर्जा देगी।

डिजिटल इंडिया ने रचा नया इतिहास, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में 25% का उछाल



नई दिल्ली। देश के कोने-कोने में डिजिटल तकनीक की पहुंच ने एक ऐसा खामोश बदलाव ला दिया है, जिसकी गूंज अब आर्थिक आंकड़ों में साफ सुनाई दे रही है। 'डिजिटल इंडिया' अभियान केवल शहरों तक सीमित न रहकर अब भारतीय गांवों की तकदीर और तस्वीर दोनों बदल रहा है। हाल ही में जारी आर्थिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट के मुताबिक, देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था (Rural Economy) में 25 फीसदी का ऐतिहासिक उछाल दर्ज किया गया है। यह विकास दर इस बात का सीधा प्रमाण है कि भारत का ग्रामीण इलाका अब केवल खेती पर निर्भर नहीं है, बल्कि वह देश के नए आर्थिक इंजन के रूप में उभर रहा है।

खेत की पगडंडी से डिजिटल बाजार तक का सफर

कभी जिन गांवों में बैंक की एक शाखा के लिए लोगों को मीलों पैदल चलना पड़ता था, आज वहां के छोटे दुकानदार, किसान और घरेलू कारीगर अपने मोबाइल फोन के एक क्लिक पर व्यापार कर रहे हैं। यूपीआई (UPI) और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स ने बिचौलियों के जाल को पूरी तरह से खत्म कर दिया है। उत्तर प्रदेश के सुदूर गांवों के हस्तशिल्प से लेकर बिहार की जैविक सब्जियों तक, सब कुछ अब सीधे वैश्विक बाजारों और महानगरों के उपभोक्ताओं तक पहुंच रहा है। मुनाफे का पैसा बिना किसी कटौती के सीधे उत्पादक के खाते में जा रहा है, जिससे उनकी क्रय शक्ति (खरीदने की क्षमता) में भारी बढ़ोतरी हुई है।

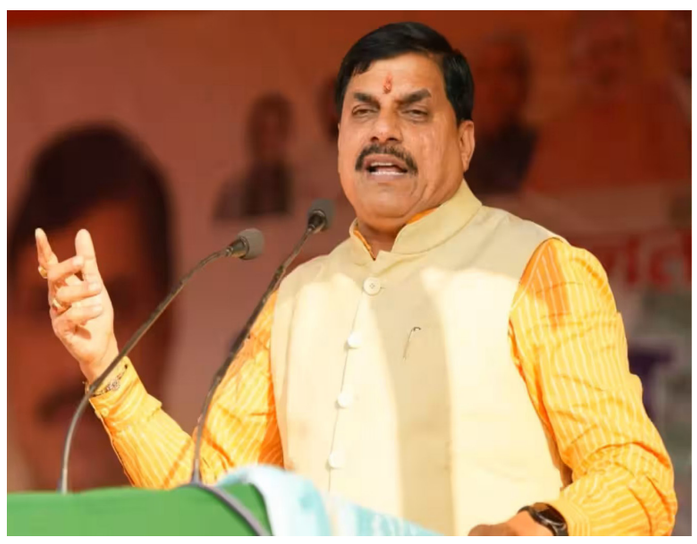
गांवों में नए उद्यमियों की नई खेप

इस डिजिटल क्रांति का सबसे खूबसूरत पहलू यह है कि इसने ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को 'रोजगार मांगने वाले' से 'रोजगार देने वाला' बना दिया है। टियर-2 और टियर-3 शहरों के साथ-साथ छोटे गांवों में भी हजारों नए माइक्रो-स्टार्टअप्स खड़े हो रहे हैं। महिलाएं घर बैठे ऑनलाइन माध्यमों से सिलाई, अचार, और हस्तकला के उद्योग चला रही हैं। इंटरनेट की कम कीमतों और स्मार्टफोन की आसान उपलब्धता ने स्थानीय स्तर पर ही सूचना सेवा केंद्रों, ऑनलाइन कोचिंग और डिजिटल लॉजिस्टिक्स के नए रोजगार पैदा किए हैं। अब युवाओं को काम की तलाश में अपनी मिट्टी छोड़कर महानगरों की झुग्गियों में भटकने की मजबूरी नहीं रही।

बदलता सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य

अर्थशास्त्रियों का मानना है कि ग्रामीण जीडीपी में आया यह 25% का उछाल केवल एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक पुनर्जागरण है। जब गांव का किसान और छोटा व्यापारी आर्थिक रूप से सशक्त होता है, तो उसका सीधा असर बच्चों की शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य और जीवन स्तर पर पड़ता है। डिजिटल इंडिया ने अमीर और गरीब के बीच की उस खाई को पाट दिया है जो दशकों से विकास में बाधा बनी हुई थी। यह बदलाव साफ संदेश दे रहा है कि नए भारत की प्रगति की कहानी अब महानगरों की ऊंची इमारतों से नहीं, बल्कि देश के आत्मविश्वासी गांवों की चौपालों से लिखी जा रही है।

सोयाबीन किसानों के लिये कैबिनेट ने मंजूर की 'भावांतर भुगतान योजना', एमएसपी और बाजार भाव के अंतर की भरपाई करेगी सरकार



भोपाल। मध्य प्रदेश के करोड़ों सोयाबीन उत्पादक किसानों के लिए इस सप्ताह राज्य सरकार ने एक ऐतिहासिक और बेहद राहत भरा फैसला लिया है।
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की कैबिनेट ने प्रदेश में सोयाबीन फसल के लिए दोबारा 'भावांतर भुगतान योजना' (Bhavantar Bhugtan Yojana) को मंजूरी दे दी है।
इस योजना का सीधा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि यदि मंडियों में किसानों को सोयाबीन का बाजार भाव केंद्र सरकार द्वारा तय न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) से कम मिलता है, तो नुकसान के अंतर की पूरी राशि सीधे किसान के बैंक खाते में ट्रांसफर की जाएगी।
22 अक्टूबर से शुरू होगी मंडियों में बिक्री इस योजना का लाभ उठाने के लिए प्रदेश के किसानों का ई-उपार्जन पोर्टल पर बड़े पैमाने पर निशुल्क डिजिटल पंजीकरण किया गया है।
नए नियमों के मुताबिक, मंडियों में पंजीकृत किसानों की सोयाबीन फसल की बिक्री 22 अक्टूबर से शुरू होकर 15 जनवरी तक चलेगी। कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि इस योजना की बहाली से मालवा-निमाड़ और मध्य प्रदेश के अन्य सोयाबीन उत्पादक क्षेत्रों के किसानों को बाजार के उतार-चढ़ाव से पूरी सुरक्षा मिलेगी और आगामी त्योहारों के सीजन में उनके घरों में समृद्धि आएगी।

भोपाल के जंबूरी मैदान में गरबे की धूम





● शिवम शुक्ला

भोपाल: नवरात्रि के पावन पर्व पर राजधानी भोपाल के भेल जंबूरी मैदान में आयोजित भोजपाल गरबा महोत्सव में अद्भुत उत्साह और आस्था का संगम देखने को मिला।

गरबा प्रांगण में एक साथ 25 हजार से अधिक युवाओं और परिवारों ने पारंपरिक चनिया-चोली और कुर्ता-पायजामा पहनकर डांडिया की खनक पर शानदार प्रस्तुतियां दीं। सवा लाख किलोवॉट के दमदार साउंड सिस्टम और गुजरात से आए कलाकारों की पारंपरिक धुनों ने पूरे माहौल को संगीतमय बना दिया।

'अंगूरी भाभी' ने जीता भोपालियों का दिल

आयोजन का सबसे बड़ा आकर्षण 'भाबीजी घर पर हैं' फेम मशहूर टीवी अभिनेत्री शुभांगी अत्रे (अंगूरी भाभी) रहीं। उन्होंने मंच से अपने चिर-परिचित अंदाज में जैसे ही **"सही पकड़े हैं"** कहा, पूरा मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। शुभांगी ने भोपाल की हरियाली, वीआईपी रोड, बड़े तालाब और यहां के इंदौरी-भोपाली स्वाद (खासकर चाट) की जमकर तारीफ की और कहा कि मध्य प्रदेश उनके लिए घर जैसा है।

कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल ने बढ़ाया उत्साह

इस महाआयोजन में प्रदेश के कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया और बेस्ट ग्रुप, बेस्ट कपल, बेस्ट मेल/फीमेल डांसर सहित विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले कलाकारों को पुरस्कृत किया।

85 फीट ऊंची केदारनाथ की झांकी बनी आकर्षण

आयोजन समिति के महामंत्री हरीश कुमार राम ने बताया कि परिसर में 85 फीट ऊंची बाबा केदारनाथ की आकर्षक झांकी बनाई गई थी, जहां दर्शन करने के लिए भारी भीड़ उमड़ी। इसके अलावा भगवान गणेश और माता रानी की वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम आयोजन समिति के अध्यक्ष सुनील यादव के अनुसार, सुरक्षा व्यवस्था को सर्वोपरि रखते हुए प्रवेश के लिए आधार कार्ड अनिवार्य किया गया था।

परिसर में सीसीटीवी कैमरों, पुलिस बल, प्राइवेट सिक्योरिटी और बाउंसर्स की मदद से कड़ी निगरानी रखी गई ताकि लोग सुरक्षित माहौल में गरबे का आनंद ले सकें।

मध्य भारत का सबसे बड़ा क्रिएटर महोत्सव,24 अक्टूबर को ताज लेकफ्रंट में सजेगा भोपाल क्रिएटर्स समिट का चौथा संस्करण



● शिवम शुक्ला

भोपाल- मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आगामी 24 अक्टूबर 2026 को 'भोपाल क्रिएटर्स समिट 2026' का चौथा संस्करण आयोजित होने जा रहा है।

यह भव्य आयोजन भोपाल के ताज लेकफ्रंट में होगा। मध्य भारत के सबसे बड़े क्रिएटर इकोसिस्टम द्वारा आयोजित इस समिट में देशभर की डिजिटल प्रतिभाओं का महाकुंभ देखने को मिलेगा।

इस वर्ष का समिट केवल एक दिन का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह 'क्रिएटर सीजन 2026' के तहत 30 दिनों तक चलने वाले क्रिएटर चैलेंजेस, संस्कृति और कम्युनिटी गतिविधियों का एक भव्य समापन (समिट और अवार्ड्स नाइट) होगा।

मुख्यमंत्री की उपस्थिति: इस वर्ष के समिट का सबसे प्रमुख आकर्षण 'क्रिएटर्स अवार्ड शो' होगा, जिसमें मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री की उपस्थिति प्रस्तावित है। मुख्यमंत्री क्रिएटर्स को सम्मानित करने के साथ-साथ उनसे सीधा संवाद भी करेंगे।

सरकार और क्रिएटर्स के बीच सेतु बनेगा मंच

इस पहल का मुख्य उद्देश्य डिजिटल क्रिएटर्स और सरकार के बीच संवाद को बढ़ावा देना तथा क्रिएटर समुदाय के योगदान को प्रोत्साहित करना है।

भोपाल क्रिएटर्स समिट का लक्ष्य उभरती प्रतिभाओं को पहचान दिलाना और मध्य प्रदेश को कला, संस्कृति एवं डिजिटल क्रिएटिविटी के एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करना है।

समिट में देश के प्रतिष्ठित ब्रांड्स और कंपनियों के विशेषज्ञ शामिल होंगे। ये विशेषज्ञ कंटेंट क्रिएशन, डिजिटल मीडिया, ब्रांड कोलैबोरेशन और मार्केटिंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पैनल चर्चा करेंगे।

यह मंच युवाओं को उद्योग जगत के दिग्गजों से सीधे जुड़ने, उनके अनुभव से सीखने और नए सहयोग विकसित करने का शानदार अवसर प्रदान करेगा।

आयोजन की मुख्य झलकियां:

विशाल भागीदारी: इस आयोजन में देशभर से 1500 से अधिक क्रिएटर्स के शामिल होने की उम्मीद है। इनमें डिजिटल कंटेंट क्रिएटर्स, फिल्ममेकर्स, फोटोग्राफर्स, कोरियोग्राफर्स, डांसर्स, गेमर्स और मनोरंजन जगत से जुड़े कलाकार एक ही मंच पर जुटेंगे।

डिजिटल रीच और ब्रांड्स: इस समिट की कुल डिजिटल पहुंच (डिजिटल रीच) 50 मिलियन से अधिक होने का अनुमान है और इसमें 100 से अधिक ब्रांड पार्टनर्स भी हिस्सा ले रहे हैं।

न्यू मार्केट को मिलेगी जाम से मुक्ति, हॉकर्स होंगे शिफ्ट



भोपाल: राजधानी के प्रमुख व्यावसायिक केंद्र न्यू मार्केट में आने वाले ग्राहकों को अब जाम और भीड़भाड़ से जल्द ही राहत मिलने वाली है। न्यू मार्केट के नो-व्हीकल जोन में रेहड़ी लगाने वाले हॉकर्स को अब टीटी नगर स्टेडियम के पास स्थित हाट बाजार में शिफ्ट किया जाएगा।

मंगलवार को नगर निगम मुख्यालय में अधिकारियों और न्यू मार्केट व्यापारी संघ के बीच हुई एक अहम बैठक में इस निर्णय पर सहमति बनी है। बाजार में ग्राहकों की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए तय किया गया है कि फुटपाथ पूरी तरह से खाली रखे जाएंगे। इसके साथ ही, अतिक्रमण रोकने के लिए दुकानों के सामने एक बार फिर से पीली लाइन की मार्किंग की जाएगी।

अग्नि सुरक्षा पर विशेष जोर, रोज होगी मॉकड्रिल

बाजार में आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए अब प्रतिदिन दमकल वाहन से मॉकड्रिल की जाएगी। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि फायर ब्रिगेड का वाहन आसानी से बाजार के अंदर पहुंच सके। इसके अतिरिक्त, 45 और 36 नंबर चबूतरे की दुकानों में लगे फायर हाइड्रेंट का रखरखाव किया जाएगा और जनभागीदारी के माध्यम से नया फायर हाइड्रेंट सिस्टम लगाने का भी निर्णय लिया गया है।

इस महत्वपूर्ण बैठक में नगर निगम के उपायुक्त भुवन गुप्ता, फायर ऑफिसर सौरभ पटेल, व्यापारी संघ के अध्यक्ष सतीश गंगराडे और अजय देवनानी समेत अन्य अधिकारी व पदाधिकारी उपस्थित थे।

एमपी में बसों का अपना 'IRCTC': अब मोबाइल से बुक होंगे बस टिकट

भोपाल: मध्यप्रदेश के बस यात्रियों को जल्द ही रेलवे (IRCTC) की तर्ज पर एक नई और आधुनिक सुविधा मिलने जा रही है। राज्य सरकार 'मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा' के तहत एक मोबाइल ऐप तैयार करा रही है, जिससे यात्री घर बैठे अपने मोबाइल से बस का टिकट बुक कर सकेंगे।

box- योजना की मुख्य बातें:

कहाँ से शुरुआत: इस योजना के पहले चरण की शुरुआत भोपाल और इंदौर के आईएसबीटी (ISBT) से करने की तैयारी है।

कैसे होगा काम: ऐप पर रूट, बस की जानकारी, और किराया देखकर यूपीआई (UPI), डेबिट-क्रेडिट कार्ड या नेट बैंकिंग से भुगतान किया जा सकेगा।

सुरक्षा और निगरानी: टिकट बुकिंग के साथ ही बसों की निगरानी के लिए जीपीएस (GPS) और कैमरे भी चालू रखे जाएंगे।

सख्त नियम: बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों और किराया लेने के बावजूद टिकट न देने वाले कंडक्टरों के खिलाफ केस और जुर्माने का सख्त प्रावधान किया गया है।

यात्रियों के लिए जरूरी सूचना:

वर्तमान में टिकट कैंसिलेशन, रिफंड या बस छूट जाने पर दूसरी बस में यात्रा जैसे नियमों पर अंतिम निर्णय आना बाकी है। इसके अलावा, मध्य प्रदेश यात्री परिवहन एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (MPYPIL) द्वारा अभी आधिकारिक ऐप का नाम या कोई लिंक जारी नहीं किया गया है।



मुरैना में 'मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान-2026'



मुरैना: मध्य प्रदेश शासन द्वारा चलाए जा रहे 'मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान-2026' के अंतर्गत पिछले हफ्ते मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुरैना का दौरा किया।

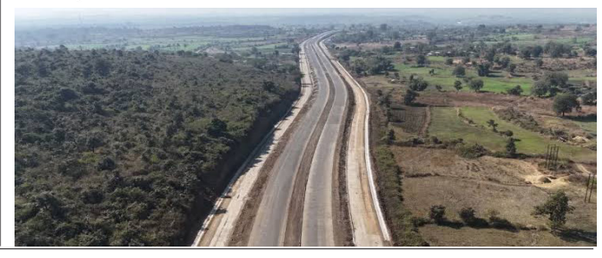
अपने इस दौरे में उन्होंने दिव्यांगजन पुनर्वास केंद्र का निरीक्षण किया और केंद्र में उपलब्ध सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं का बारीकी से जायजा लिया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने वहां मौजूद दिव्यांगजनों एवं बच्चों से आत्मीय संवाद किया। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा दिव्यांगजनों की सुविधा के लिए उन्हें ट्राइसाइकिल भी वितरित की गईं।

मध्य प्रदेश में औद्योगिक क्रांति की तैयारी: 7 जिलों को जोड़कर बनेगा 'विश्वस्तरीय इंडस्ट्रियल कॉरिडोर'

भोपाल: 'हर अंचल में निवेश और हर जिले में रोजगार' के संकल्प को साकार करने की दिशा में मध्य प्रदेश सरकार ने एक ऐतिहासिक निर्णय लिया है। राज्य के सर्वांगीण और संतुलित क्षेत्रीय विकास को गति देने के लिए प्रदेश के तीन सबसे बड़े आर्थिक केंद्रों- जबलपुर, भोपाल और इंदौर को जोड़ते हुए एक 'इंडस्ट्रियल कॉरिडोर' बनाने की स्वीकृति दी गई है।

इस महत्वाकांक्षी परियोजना के माध्यम से 7 प्रमुख जिलों- इंदौर, भोपाल, जबलपुर, नरसिंहपुर, रायसेन, सीहोर और देवास में विश्वस्तरीय औद्योगिक संकुलों की स्थापना की जाएगी। इस पहल से महाकौशल, मध्य क्षेत्र और मालवा अंचल में व्यापक आर्थिक समृद्धि आएगी और स्थानीय युवाओं को उच्च गुणवत्ता वाले आधुनिक रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।



सांसद डॉ. राजेश मिश्रा ने स्थानीय उत्पादों को अपनाने की अपील

स्वसहायता समूहों के उत्पादों से सजेगा दिवाली का त्योहार, गिफ्ट हैंपर लॉन्च



सीधी : दीपावली के त्योहारको स्थानीय उत्पादों और महिला स्वसहायता समूहों की मेहनत से जोड़ने की पहल के तहत सेवा संकल्प अभियान के समापन अवसर पर आयोजित युवा संगम कार्यक्रम में स्वसहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों से तैयार विशेष दिवाली गिफ्ट हैंपर का शुभारंभ किया गया। सांसद डॉ. राजेश मिश्रा, सिहावल विधायक श्री विश्वामित्र पाठक, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती मंजू सिंह, कलेक्टर विकास मिश्रा एवं समाजसेवी श्री देव कुमार सिंह चौहान ने गिफ्ट हैंपर लॉन्च किया। इस पहल का उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को बाजार उपलब्ध कराना, महिला स्वसहायता समूहों की आजीविका को मजबूत करना और त्योहारों के अवसर पर स्थानीय उत्पादों को उपहार के रूप में अपनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना है।

स्थानीय उत्पाद अपनाएं, महिला समूहों की आजीविका बढ़ाएं - सांसद

सांसद डॉ. राजेश मिश्रा ने लोगों से अपील की कि दीपावली पर उपहार देने के लिए स्थानीय उत्पादों और स्वसहायता समूहों द्वारा निर्मित वस्तुओं को प्राथमिकता दें।

उन्होंने कहा कि महिला स्वसहायता समूहों की मेहनत और हुनर को बाजार से जोड़ने पर उनकी आय बढ़ाने के साथ स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

स्थानीय उत्पादों को अपनाना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और उनके आत्मनिर्भर बनने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

उन्होंने 'लोकल से ग्लोबल' की भावना के अनुरूप स्थानीय उत्पादों को व्यापक पहचान दिलाने तथा अधिकाधिक लोगों से इन उत्पादों की खरीदारी करने का आह्वान किया।

पारंपरिक स्वाद से स्थानीय शिल्प तक, एक ही हैंपर में अनेक उत्पाद

दिवाली गिफ्ट हैंपर में स्थानीय स्वाद, पारंपरिक खाद्य सामग्री, हस्तनिर्मित वस्तुओं और त्योहार से जुड़ी उपयोगी सामग्री को शामिल किया गया है।

इसमें महुआ लड्डू, महुआ कुकीज, कोदो, टाबेल/हैंडलूम फैब्रिक, करी लड्डू, मूंगफली लड्डू, चिप्स, मिट्टी के दीपक, धूप एवं बत्ती तथा रंगोली पैच शामिल हैं। इन उत्पादों के माध्यम से स्थानीय खाद्य परंपराओं, हस्तशिल्प और महिला समूहों के कौशल को एक ही उपहार पैकेज में प्रस्तुत किया गया है।

आकर्षक छूट के साथ कस्टमाइज्ड हैंपर की सुविधा

दीपावली गिफ्ट हैंपर आकर्षक छूट के साथ उपलब्ध कराए जाएंगे। ग्राहकों की आवश्यकता, पसंद और बजट के अनुसार हैंपर को कस्टमाइज कराने की सुविधा भी रहेगी।

इससे व्यक्तिगत उपहारों के साथ-साथ परिवारों, संस्थानों, कार्यालयों और अन्य संगठनों के लिए भी स्थानीय उत्पादों से तैयार उपहार चुनना आसान होगा।

ऑर्डर करने के लिए श्री शैलेन्द्र द्विवेदी जिला प्रबंधक लघु उद्यमिता मोबाइल नंबर **9424746040** पर संपर्क किया जा सकता है।

महिला स्वसहायता समूहों को बाजार से जोड़ने की पहल

स्वसहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों को एक व्यवस्थित गिफ्ट हैंपर के रूप में प्रस्तुत करने से उनकी बिक्री और बाजार तक पहुंच बढ़ाने की संभावनाएं मजबूत होंगी।

दीपावली जैसे प्रमुख त्योहार पर स्थानीय उत्पादों को उपहार के रूप में प्रोत्साहित करना महिला समूहों के लिए अतिरिक्त आजीविका के अवसर सृजित कर सकता है। यह पहल महिलाओं के हुनर को पहचान दिलाने, स्थानीय उत्पादों की मांग बढ़ाने और सामुदायिक स्तर पर आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम में जनपद पंचायत अध्यक्ष सीधी धर्मेंद्र सिंह परिहार, विधायक प्रतिनिधि विश्वबंधु धर द्विवेदी, जिला पंचायत सदस्य प्रदीप शुक्ला, देवेंद्र त्रिपाठी, जन अभियान परिषद के शासी निकाय सदस्य कृष्णकांत द्विवेदी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी, उप पुलिस अधीक्षक राघवेंद्र द्विवेदी, सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे।

दिवाली पर स्थानीय उत्पादों से सजेगा उपहारों का बाजार

सीधी में महिला स्वसहायता समूहों को बाजार से जोड़ने के उद्देश्य से विशेष दिवाली गिफ्ट हैंपर लॉन्च किया गया। सेवा संकल्प अभियान के समापन पर आयोजित युवा संगम कार्यक्रम में सांसद डॉ. राजेश मिश्रा सहित जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने इसका शुभारंभ किया। हैंपर में महुआ लड्डू, महुआ कुकीज, कोदो, हैंडलूम फैब्रिक, मूंगफली लड्डू, चिप्स, मिट्टी के दीपक, धूप-बत्ती और रंगोली पैच जैसे स्थानीय उत्पाद शामिल हैं।

17 श्रद्धालुओ की मौत, कौन जिम्मेदार?

आस्था के उत्सव में मातम: कोलकाता के ऐतिहासिक पूजा पंडाल में अव्यवस्था से भगदड़, 17 श्रद्धालुओं की मौत



पश्चिम बंगाल : पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में दुर्गा पूजा का उल्लास उस वक्त गहरे शोक में बदल गया, जब सप्तमी की शाम उत्तर कोलकाता के ऐतिहासिक चोरबागान पूजा पंडाल में भीषण भगदड़ मच गई। इस हृदयविदारक घटना में 17 लोगों की अकाल मृत्यु हो गई, जिनमें 13 महिलाएं, तीन पुरुष और एक बच्चा शामिल है। इसके अलावा 25 से अधिक लोग घायल हुए हैं, जिनमें से कई की हालत गंभीर बनी हुई है।

बारिश, अंधेरा और संकरे रास्ते बने काल

सारदा पार्क मैदान में करीब 20 हजार वर्ग फीट में बना यह 91 साल पुराना (1935 में स्थापित) पंडाल इस बार 'बियॉन्ड साउंड' थीम पर आधारित था। थीम के कारण अंदर लगभग अंधेरा रखा गया था और 360 डिग्री का घुमावदार रास्ता बनाया गया था। प्रवेश और निकास के लिए केवल एक-एक संकरी गली थी।

शाम को अचानक हुई बारिशसे बचने के लिए बाहर कतार में खड़े सैकड़ों लोग एक साथ अंदर घुसने लगे। गेट पर अचानक दबाव बढ़ने से एग्जिट गेट का एक हिस्सा टूटकर गिर गया।

आयोजकों और सुरक्षाकर्मियों की घबराहट ने स्थिति को और बिगाड़ दिया। सुरक्षाकर्मियों ने एक साथ सीटी बजानी शुरू कर दी और अनाउंसमेंट किया, जिससे अंधेरे में फंसे लोगों में दहशत फैल गई और जान बचाने की होड़ में भगदड़ मच गई।

त्रासदी की दर्दनाक दास्तां

हादसे के बाद का मंजर रूह कंपा देने वाला था। कुम्हारटोली के रहने वाले सोनू का दर्द इस हादसे की भयावहता बयां करता है। सोनू अपनी मां के साथ दर्शन करने आए थे, लेकिन भीड़ के धक्के में वे नीचे गिर गए।

जब तक वे संभलकर अपनी मां तक पहुंचे, तब तक उनकी मां की सांसें थम चुकी थीं। मौके पर इतनी अफरा-तफरी थी कि घायलों को बाइक से और कुछ शवों को ओला कैब से अस्पताल ले जाना पड़ा।

प्रशासनिक कार्रवाई और प्रतिक्रियाएं

हादसे के तुरंत बाद चोरबागान समेत चार अन्य पंडालों को सुरक्षा की दृष्टि से बंद कर दिया गया है। पंडाल की सुरक्षा में लगी निजी एजेंसी के कर्मचारियों को हिरासत में लिया गया है।

मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने स्पष्ट किया है कि यह हादसा पूजा समिति द्वारा तैनात निजी सुरक्षाकर्मियों के भारी कुप्रबंधन और उनकी गलत अनाउंसमेंट के कारण हुआ। वहीं, कोलकाता दौरे पर आए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस त्रासदी पर गहरा दुख व्यक्त किया है और शोक स्वरूप रविवार के अपने सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए हैं।

सुरक्षा पर उठते सवाल

पिछले 4 सालों से थीम बेस्ड बन रहे इस पंडाल में हर साल भीड़ बढ़ती जा रही थी, लेकिन संकरी गलियों वाले इस इलाके में भीड़ प्रबंधन के पुख्ता इंतजाम नहीं थे। पिछले 11 सालों में कोलकाता के पंडालों में यह तीसरी बड़ी भगदड़ है (इससे पहले 2021 में श्रीभूमि और 2015 में देशप्रिय पार्क में भगदड़ मची थी), लेकिन यह पहली बार है जब इतनी बड़ी संख्या में जनहानि हुई है। यह हादसा प्रशासन और पूजा समितियों के लिए एक कड़ा सबक है कि आस्था के नाम पर सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जा सकता।



"मुझ पर केस हुआ तो मामला कानूनी हो जाएगा, अधिकारियों को चुकानी होगी कीमत"

वोट चोरी पर राहुल गांधी की खुली चुनौती





पणजी: लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने देश की चुनाव प्रणाली और मतदान प्रक्रिया की पारदर्शिता पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े किए हैं।

गोवा की राजधानी पणजी में एक जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने सीधे तौर पर 'वोट चोरी' का आरोप लगाया। उन्होंने स्पष्ट किया कि वह यह बात केवल गोवा के संदर्भ में नहीं, बल्कि देश के हर राज्य में पूरी मजबूती के साथ कह रहे हैं। उनका यह बयान राष्ट्रीय राजनीति में चुनावी निष्पक्षता को लेकर एक नया भूचाल ला सकता है।

अपने आक्रामक संबोधन में राहुल गांधी ने सरकार और चुनाव तंत्र को घेरते हुए एक बेहद दिलचस्प तर्क पेश किया। उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि अगर उनके इन गंभीर आरोपों पर उनके खिलाफ कोई मुकदमा दर्ज किया जाता है, तो पूरा मामला कानूनी हो जाएगा। राजनीतिक जानकारों के अनुसार, इस स्पष्ट बयान के पीछे एक बड़ी रणनीति है।

राहुल गांधी का मानना है कि यदि उनके खिलाफ अदालत में मामला जाता है, तो कानूनी प्रक्रिया शुरू होने के साथ ही विपक्ष को मतदान मशीनों और उनसे निकलने वाली सत्यापन पर्चियों की जांच के लिए सुबूत मांगने का अधिकार मिल जाएगा। उनका दावा है कि इसी विस्तृत कानूनी जांच के डर से उन पर कोई भी कार्रवाई करने से बचा जा रहा है।

इस दौरान राहुल गांधी ने चुनाव आयोग के शीर्ष अधिकारियों का नाम लेते हुए भी तीखी टिप्पणी की। उन्होंने सीधा संदेश देते हुए कहा कि अधिकारी यह अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हें इसकी कीमत चुकानी होगी।

यह बयान इस बात का साफ संकेत है कि प्रमुख विपक्षी दल चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर लगातार नजर रखे हुए है और इस अहम मुद्दे को आसानी से छोड़ने वाला नहीं है।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष जैसी अहम संवैधानिक जिम्मेदारी निभा रहे राहुल गांधी द्वारा चुनावी बुनियाद पर उठाए गए ये सवाल केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित नहीं हैं। आगामी समय में देश के कई राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं।

ऐसे में पणजी से दिया गया यह कड़ा संदेश बताता है कि आने वाले चुनावों और संसद के आगामी सत्रों में 'चुनावी पारदर्शिता और वोट चोरी' का मुद्दा विपक्ष का सबसे धारदार हथियार बनने जा रहा है। अब देखना यह है कि सत्ता पक्ष और चुनाव प्रणाली से जुड़े अधिकारी नेता प्रतिपक्ष की इस खुली चुनौती का किस प्रकार जवाब देते हैं।

मिर्जापुर में दिलचस्प हुआ सियासी घमासान: पूर्व जिलाधिकारी दिव्या मित्तल उतरीं चुनावी अखाड़े में, भाजपा-सपा की बढ़ी बेचैनी



● प्रकाश त्रिपाठी

मिर्जापुर : उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर का सियासी पारा अचानक गर्मा गया है। भारतीय प्रशासनिक सेवा की प्रतिष्ठित नौकरी छोड़कर जनसेवा के मैदान में उतरने वाली पूर्व जिलाधिकारी दिव्या मित्तल ने मिर्जापुर सदर विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया है।

उन्होंने अपनी नई 'जननीति भारत पार्टी' का गठन किया है और 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए अभी से ताल ठोंक दी है। एक तेजतर्रार पूर्व अधिकारी के सीधे चुनावी मैदान में उतरने से जिले की राजनीति में हलचल मच गई है और स्थापित राजनीतिक दलों के कई नेताओं की रातों की नींद उड़ गई है।

वर्तमान में मिर्जापुर सदर क्षेत्र पर सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी का क जा है। भाजपा के रत्नाकर मिश्रा यहां से लगातार दो बार जीत का परचम लहरा चुके हैं। इससे पहले इस क्षेत्र पर लंबे समय तक समाजवादी पार्टी का दबदबा रहा था। अब दिव्या मित्तल के अपनी नई पार्टी के साथ मैदान में आने से यह मुकाबला दोतरफा न रहकर त्रिकोणीय होने के पूरे आसार बन गए हैं। भाजपा के सामने जहां अपनी जीत की लय बरकरार रखने और अपना गढ़ बचाने की भारी चुनौती होगी, वहीं समाजवादी पार्टी के लिए अपने छिटके हुए मतदाताओं को वापस लाना किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं होगा।

दिव्या मित्तल का मिर्जापुर से जुड़ाव बेहद खास रहा है। जब वे यहां की जिलाधिकारी थीं, तब अपने कामकाज और सीधे जनता की समस्याएं सुनने की शैली के कारण उन्होंने आम लोगों के दिलों में गहरी जगह बना ली थी। उनका कार्यकाल काफी लोकप्रिय रहा था। स्थानीय सांसद व केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल के साथ प्रशासनिक स्तर पर उनकी तनातनी भी किसी से छिपी नहीं है।

ऐसे में उनका मिर्जापुर को ही अपनी राजनीतिक कर्मभूमि के रूप में चुनना, सत्ता पक्ष के लिए एक सीधा और कड़ा राजनीतिक संदेश माना जा रहा है।

अगर मिर्जापुर सदर के जातीय समीकरणों पर नजर डालें, तो यहां चुनाव नतीजे तय करने में वैश्य मतदाताओं की भूमिका सबसे अहम होती है, जिनकी संख्या करीब डेढ़ लाख के आसपास है। इसके बाद ब्राह्मण और अल्पसंख्यक मतदाता भी अच्छी खासी तादाद में हैं। इसके साथ ही दलित और पिछड़े वर्ग के मतदाता भी निर्णायक स्थिति में रहते हैं।

दिव्या मित्तल की खासियत यह है कि उनकी अपील किसी एक जाति या वर्ग तक सीमित नहीं है। वे सुशासन और विकास के नाम पर पारंपरिक वोट बैंक में बड़ी सेंधमारी कर सकती हैं। सवर्ण मतदाता, जिन्हें आमतौर पर सत्ताधारी दल का मुख्य आधार माना जाता है, वे भी उनके पक्ष में गोलबंद हो सकते हैं। यही समीकरण बड़े दलों की चिंता का सबसे बड़ा कारण बन रहा है।

अपनी राजनीतिक पारी की शुरुआत करते हुए दिव्या मित्तल ने स्पष्ट कर दिया है कि वे राजनीति करने नहीं, बल्कि जननीति करने आई हैं।

किसी भी स्थापित दल में जाने के बजाय अपना रास्ता खुद चुनने वाली दिव्या ने जनता से तीन बड़े वादे किए हैं। उन्होंने कहा है कि उनकी पार्टी में नीतियां बंद कमरों में नहीं बल्कि जनता के बीच तय होंगी। उनका दूसरा वादा है कि कोई भी फैसला किसी की जाति या रसूख देखकर नहीं बल्कि पूरी तरह निष्पक्ष होगा। इसके अलावा उन्होंने भरोसा दिलाया है कि जनप्रतिनिधि पूरी तरह जवाबदेह होंगे और विधायक खुद जनता के दरवाजे पर जाकर उनकी समस्याएं सुलझाएंगे।

कुल मिलाकर, 2027 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव मिर्जापुर के लिए बेहद रोचक होने जा रहा है। एक तरफ बरसों से जमे हुए अनुभवी राजनेता होंगे और दूसरी तरफ बदलाव का नया नारा लेकर मैदान में उतरीं एक पूर्व प्रशासक। अब यह देखना वाकई दिलचस्प होगा कि मिर्जापुर की जनता एक बार फिर पुराने राजनीतिक दलों पर ही भरोसा जताती है या फिर इस नई बयार का साथ देकर कोई नया इतिहास लिखती है।

मिर्जापुर की सियासत में क्या बदल सकता है ?

दिव्या मित्तल की चुनावी एंट्री से मिर्जापुर सदर में मुकाबले का गणित बदल सकता है। नए राजनीतिक विकल्प के सामने सबसे बड़ी चुनौती लोकप्रियता को वास्तविक वोटों में बदलने, मजबूत स्थानीय संगठन खड़ा करने और बूथ स्तर तक पहुंच बनाने की होगी।

वहीं, पारंपरिक दलों के लिए उम्मीदवार की व्यक्तिगत छवि और मतदाताओं के बदलते रुझान को समझना अहम होगा। इस चुनाव में केवल पार्टी का नाम ही नहीं, बल्कि स्थानीय मुद्दे, उम्मीदवार की विश्वसनीयता और जनता से सीधा जुड़ाव भी निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

पांच हजार दीयों के आयोजन के लिए 4.28 करोड़ रुपये की निविदा क्यों स्वीकृत की गई और बोली जमा करने के लिए इतना कम समय क्यों दिया गया? इन आरोपों की पुष्टि के लिए विभागीय दस्तावेजों और निविदा प्रक्रिया की जांच जरूरी है।

10 हजार रुपये का एक दीया! 'आशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम में करोड़ों का घोटाला, कांग्रेस ने मांगी सीबीआई जांच



भोपाल: 10 हजार रुपये का एक दीया! यह सुनकर भले ही आपको यकीन न हो, लेकिन मध्य प्रदेश में पर्यटन विभाग पर कुछ ऐसे ही सनसनीखेज आरोप लगे हैं। प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर आयोजित 'एक दीया आशीर्वाद का' कार्यक्रम अब विवादों में घिर गया है। कांग्रेस के प्रदेश महामंत्री अमित शर्मा ने पर्यटन विभाग पर कथित घोटाले का आरोप लगाते हुए कहा कि महज पांच हजार दीये जलाने के लिए करीब 4.28 करोड़ रुपये की निविदा स्वीकृत की गई।

इस पूरी राशि को दीयों की संख्या से भाग देने पर प्रति दीया लागत लगभग 8,560 रुपये बैठती है, जिसे कांग्रेस करीब 10 हजार रुपये प्रति दीया बता रही है। अमित शर्मा ने आरोप लगाया कि इस पूरी प्रक्रिया में नियमों की अनदेखी कर अहमदाबाद की 'गो बनाना' नामक कंपनी को फायदा पहुंचाने की कोशिश की गई।

विवाद का एक बड़ा कारण निविदा जमा करने के लिए दिया गया बेहद कम समय भी है। बताया जा रहा है कि 16 सितंबर को दोपहर 3:46 बजे से शाम 5:15 बजे तक ही निविदा जमा करने की समय-सीमा निर्धारित की गई थी। यानी इच्छुक कंपनियों को बोली लगाने के लिए महज डेढ़ घंटे का समय मिला।

कांग्रेस ने सवाल उठाया है कि इतनी कम समय-सीमा निर्धारित करने की जरूरत क्यों पड़ी और क्या इससे अन्य कंपनियों को प्रतिस्पर्धा का पर्याप्त अवसर मिल पाया?

पार्टी ने निविदा प्रक्रिया की पारदर्शिता पर सवाल उठाते हुए पूरे मामले की जांच की मांग की है। मामला केवल दीयों की कीमत तक सीमित नहीं है, बल्कि सरकारी धन के इस्तेमाल और निविदा प्रक्रिया की जवाबदेही से भी जुड़ा है। यह स्पष्ट होना जरूरी है कि 4.28 करोड़ रुपये की राशि में आयोजन से संबंधित कौन-कौन से खर्च शामिल थे और कंपनी का चयन किन शर्तों के आधार पर किया गया।

कांग्रेस ने इस कथित घोटाले की केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से जांच कराने की मांग की है। हालांकि, लगाए गए आरोपों की पुष्टि के लिए निविदा दस्तावेजों और विभागीय रिकॉर्ड की जांच जरूरी है। अब देखना होगा कि पर्यटन विभाग इन आरोपों पर क्या स्पष्टीकरण देता है और सरकार इस मामले में जांच का आदेश देती है या नहीं।

एक नज़र में पूरा मामला

मुख्य बिंदु	विवरण
कार्यक्रम	'एक दीया आशीर्वाद का'
आयोजन का अवसर	प्रधानमंत्री का जन्मदिन
संबंधित विभाग	मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग
कुल निविदा राशि	लगभग ₹4.28 करोड़
दीयों की संख्या	5,000
प्रति दीया औसत लागत	लगभग ₹8,560
कांग्रेस की मांग	पूरे मामले की सीबीआई जांच



असीत पाठक (प्रधान संपादक देश दर्पण संवाद)

आज हम रावण दहन करके भगवान श्रीराम की विजय का उत्सव मनाते हैं। यह हमारी धार्मिक परंपरा, सांस्कृतिक विरासत और जीवन-मूल्यों का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है।

लेकिन क्या दशहरे का उद्देश्य केवल रावण के पुतले का दहन कर देना है? निश्चित रूप से नहीं। इस महान पर्व का वास्तविक उद्देश्य उसके भीतर छिपे संदेश को समझना और अपने जीवन में उतारना है।

रावण कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। वह प्रकांड विद्वान, महान शिवभक्त और असाधारण ज्ञान का धनी था। लेकिन उसके भीतर अहंकार, अधर्म और अनैतिक आचरण ने ऐसी जगह बना ली कि उसका ज्ञान भी उसे विनाश से नहीं बचा सका।

यह हमें सिखाता है कि केवल विद्वान होना पर्याप्त नहीं है; ज्ञान के साथ विवेक, चरित्र और नैतिकता का होना भी आवश्यक है।

रावण के अंत के लिए भगवान श्रीराम ने मानव रूप में अवतार लिया। वे चाहते तो अपनी दिव्य शक्ति से पल भर में उसका अंत कर सकते थे, उन्होंने वनवास सहा, कठिनाइयों का सामना किया, सहयोगियों को संगठित किया, सेना तैयार की और युद्ध के मैदान में उतरकर अधर्म का अंत किया।

इस प्रसंग में हमारे लिए एक बहुत बड़ा संदेश छिपा है—जब स्वयं भगवान राम ने धर्म की स्थापना के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाया, तो हम मनुष्यों को भी अन्याय और बुराई के विरुद्ध खड़े होने का साहस रखना चाहिए।

जीवन में अनेक बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जब हमें लगता है कि हम अकेले हैं, हमारे पास पर्याप्त साधन नहीं हैं, विरोधी हमसे अधिक शक्तिशाली है या सफलता की संभावना बहुत कम है।

ऐसे समय में हम निराश हो जाते हैं, अपनी क्षमता पर संदेह करने लगते हैं और कभी-कभी परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देते हैं।

लेकिन दशहरा हमें सिखाता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, हमें अपने संकल्प से पीछे नहीं हटना चाहिए।

हमें संघर्ष करना होगा, हार न मानने का साहस रखना होगा, अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहना होगा और बुराई के सामने समर्पण करने के बजाय उसका सामना करना होगा।

इसी प्रकार, जब समाज में भ्रष्टाचार, अन्याय, शोषण या अनैतिकता दिखाई दे, तो हमें अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। हमें सत्य, साहस, विवेक और संवैधानिक तथा नैतिक तरीकों से उनका विरोध करना चाहिए।

याद रखिए, बुराई की ताकत से अधिक महत्वपूर्ण है अच्छाई के पक्ष में खड़े होने का हमारा संकल्प।

इसलिए आइए, इस दशहरे पर केवल रावण का पुतला जलाने तक सीमित न रहें। अपने भीतर की बुराइयों को समाप्त करने और समाज की बुराइयों के विरुद्ध खड़े होने का संकल्प लें।

निराशा को आशा से, भय को साहस से, अहंकार को विनम्रता से और अन्याय को सत्य एवं धर्म से पराजित करने का प्रयास करें।

संघर्ष करना है, संकल्पित रहना है, हार नहीं माननी है और बुराई के सामने कभी समर्पण नहीं करना है। यही दशहरे का संदेश है, यही श्रीराम के आदर्शों की प्रेरणा है और यही एक बेहतर व्यक्ति, बेहतर समाज तथा बेहतर राष्ट्र के निर्माण का मार्ग है।

आप सभी को विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाएँ! जय श्रीराम!

विचार लेख

एआई युग का दशहरा



– शिवम शुक्ला
(कार्यकारी संपादक, देश दर्पण संवाद)

बुराई पर अच्छाई और असत्य पर सत्य की जीत का महापर्व 'विजयादशमी' केवल एक त्योहार नहीं है, बल्कि यह हर साल हमारे भीतर के विवेक को जगाने का एक वैचारिक अनुष्ठान है।

सदियों से हम रावण के दस सिरों को इंसानी कमजोरियों जैसे—क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के प्रतीक के रूप में देखते आए हैं।

लेकिन आज, जब हम सन् 2026 के इस हाई-टेक और डिजिटल युग में खड़े हैं, तब हमें अपने चारों तरफ एक नया, अदृश्य और बेहद शक्तिशाली रावण सिर उठाता हुआ दिखाई दे रहा है।

यह रावण है—आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का दुरुपयोग और इसके पीछे छिपा डिजिटल भटकाव।

आज एआई तकनीक चिकित्सा से लेकर कृषि और अंतरिक्ष विज्ञान तक में नए इतिहास रच रही है। यह इंसानी सभ्यता के लिए एक अद्भुत वरदान साबित हो सकती है। लेकिन हमें लंकापति रावण का वह रूप भी याद रखना होगा—वह चारों वेदों का ज्ञाता और अत्यंत विद्वान था, परंतु जब उसकी इस अपार शक्ति और ज्ञान को अहंकार तथा गलत आचरण का साथ मिला, तो वह विनाश का कारण बन गया। ठीक इसी तरह, जब आज की सबसे शक्तिशाली तकनीक 'एआई' गलत हाथों में जाती है, तो यह 'डीपफेक', साइबर ठगी, समाज में नफरत फैलाने वाली झूठी खबरों (फ़ेक न्यूज़) और इंसानी रिश्तों में बढ़ते अकेलेपन के रूप में एक नए रावण का रूप ले लेती है।

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है—'जहां सुमति तहं संपति नाना, जहां कुमति तहं बिपति निदाना।' यानी जहां अच्छी बुद्धि होती है, वहां सुख-समृद्धि होती है।

आज इंटरनेट और सोशल मीडिया के इस समंदर में हमें इसी 'सुमति' यानी सही और गलत के बीच फर्क करने वाले मानवीय विवेक की सबसे ज्यादा जरूरत है।

इस डिजिटल युग के रावण का वध करने के लिए हमें किसी पारंपरिक तीर-धनुष की नहीं, बल्कि डिजिटल साक्षरता, साइबर जागरूकता और कड़े नैतिक मूल्यों रूपी आधुनिक अस्त्रों की आवश्यकता है।

एक पत्रकार और इस समाज के सजग नागरिक के रूप में मेरा यह मानना है कि तकनीक को हमारा स्वामी नहीं, बल्कि सेवक होना चाहिए। मशीनें कितनी भी स्मार्ट हो जाएं, वे कभी इंसानी दिल की धड़कन, संवेदना और आपसी भाईचारे की जगह नहीं ले सकतीं।

इस विजयादशमी पर, आइए हम सब मिलकर एक संकल्प लें—हम तकनीक का उपयोग समाज को जोड़ने और देश को आगे बढ़ाने के लिए करेंगे, न कि किसी के चरित्र का हनन करने या समाज में भ्रम फैलाने के लिए।

जब हम अपनी सोच को सकारात्मक बनाएंगे और डिजिटल दुनिया में भी अपनी मर्यादाओं को कायम रखेंगे, तभी इस एआई युग में सही मायने में 'दशहरे' का पर्व सार्थक होगा।

विचार लेख



डॉ. प्रेम व्यास (प्रदेश मीडिया पैनलिस्ट, भाजपा, मध्य प्रदेश)

संवैधानिक संस्थाओं पर प्रहार: लोकतंत्र की चिंता या विपक्ष की राजनीतिक हताशा ?

लोकतंत्र में असहमति और शांतिपूर्ण विरोध का अधिकार हर नागरिक को प्राप्त है, लेकिन आम जनता को परेशानी में डालकर और संवैधानिक संस्थाओं पर राजनीतिक स्वार्थ के लिए सवाल उठाकर जो विमर्श खड़ा किया जा रहा है, वह अनुचित है।

कांग्रेस, आम आदमी पार्टी और अन्य विपक्षी दलों द्वारा चुनाव आयोग जैसी निष्पक्ष संस्थाओं को निशाना बनाना यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या यह वास्तव में लोकतंत्र की रक्षा का प्रयास है या अपनी खिसकती राजनीतिक जमीन को बचाने की हताशा।

हाल ही में बिहार में मतदाता सूची के पुनरीक्षण के दौरान लगभग 65 लाख नाम हटाए गए थे। इसके बाद चुनाव आयोग द्वारा नाम जुड़वाने की प्रक्रिया शुरू करने पर मात्र 33 हजार आवेदन प्राप्त हुए। यह आंकड़ा स्पष्ट करता है कि मतदाता सूची को पारदर्शी बनाने की प्रक्रिया को विपक्ष द्वारा बिना तथ्यों के विवादित बनाने का प्रयास किया गया। विपक्ष को आरोप लगाने से पहले प्रामाणिकता और तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में विरोध प्रदर्शन की एक मर्यादा होती है। पूर्व में हुए कुछ प्रदर्शनों के दौरान जिस तरह से अराजक तत्वों ने व्यवस्था को बाधित करने, प्रशासनिक अमले से टकराव करने और अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने का प्रयास किया, वह किसी भी परिपक्व लोकतंत्र के लिए उचित नहीं ठहराया जा सकता। असहमति का सम्मान होना चाहिए, लेकिन हिंसा और अराजकता के लिए लोकतंत्र में कोई स्थान नहीं है।

चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाने वाली कांग्रेस को अपने ऐतिहासिक रिकॉर्ड का भी आत्ममंथन करना चाहिए। 1975 में जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के निर्वाचन को निरस्त किया, तो देश पर आपातकाल थोप दिया गया, जिसने नागरिक अधिकारों और प्रेस की स्वतंत्रता को कुचल दिया। इसी तरह, 1992 में बिना किसी ठोस संवैधानिक औचित्य के मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश की चुनी हुई भाजपा सरकारों को बर्खास्त कर दिया गया था। 1999 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार मात्र एक वोट से गिरा दी गई थी।

ये ऐतिहासिक तथ्य दर्शाते हैं कि संवैधानिक मर्यादाओं का उल्लंघन किसने किया है।

चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया पर सवाल उठाने वाले विपक्षी दलों को अतीत के उदाहरण भी देखने चाहिए। तत्कालीन मुख्य चुनाव आयुक्त एन. गोपालस्वामी ने चुनाव आयुक्त नवीन चावला पर पक्षपात के गंभीर आरोप लगाते हुए उन्हें हटाने की सिफारिश की थी, जिसे तत्कालीन यूपीए सरकार ने नजरअंदाज कर दिया और बाद में उन्हें मुख्य चुनाव आयुक्त बनाया गया।

इसी तरह, पूर्व चुनाव आयुक्त एम.एस.गिल को सेवानिवृत्ति के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार में केंद्रीय मंत्री बनाया गया। ऐसे में नियुक्ति प्रक्रियाओं पर दोहरे मापदंड अपनाना विपक्ष की मंशा पर सवाल खड़े करता है।

विपक्ष के नेताओं, विशेषकर राहुल गांधी को यह समझना होगा कि केवल बयानबाजी से लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर नहीं किया जा सकता। यदि उनके पास अनियमितता के पुख्ता प्रमाण हैं, तो उन्हें संवैधानिक मंचों और न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। देश की जनता जागरूक है और वह राजनीतिक दलों के आचरण, इतिहास और उनकी नीयत का बहुत बारीकी से मूल्यांकन करती है।

लोकतंत्र की रक्षा केवल नारों से नहीं, बल्कि संवैधानिक संस्थाओं के प्रति सम्मान और सत्यनिष्ठा से होती है। कबीरदास जी ने ठीक ही कहा है:
"भीतर सों मैलो हियो, बाहर रूप अनेक। नारायण तासों भलो, कौआ तन मन एक॥"

जो दल लोकतंत्र की रक्षा का दावा करते हैं, उनके अपने आचरण और इतिहास में भी लोकतांत्रिक मूल्य झलकने चाहिए। देश की जनता अपने विवेक से सही और गलत का निर्णय करने में पूरी तरह सक्षम है।

विचार लेख



– सौभाग्य श्रीवास्तव
(सब एडिटर, दैनिक भास्कर)

प्रतिभा छोटे शहरों की, अवसर महानगरों के ही क्यों?

देश के छोटे शहरों में सुबह जब कोई युवा पीठ पर बैग टांगकर रेलवे स्टेशन पहुंचता है, तो उसके साथ सिर्फ कुछ कपड़े और जरूरी सामान नहीं होता। उसके साथ परिवार की उम्मीदें, माता-पिता की वर्षों की कमाई और बेहतर भविष्य का एक सपना भी होता है। वह अपना शहर छोड़ना नहीं चाहता, लेकिन कई बार उसे लगता है कि वहां रुककर उसके सपनों को वह उड़ान नहीं मिल पाएगी, जिसकी उसे तलाश है। छोटे शहरों से युवाओं का पलायन इसी मजबूरी की कहानी है।

आज देश के बड़े महानगर रोजगार, बेहतर शिक्षा और करियर की संभावनाओं के केंद्र बन चुके हैं। दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और पुणे जैसे शहरों की ओर युवाओं का आकर्षण स्वाभाविक है। वहां बड़ी कंपनियां हैं, नए उद्योग हैं और अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने के अवसर भी। परेशानी इन शहरों के विकास से नहीं, बल्कि इस बात से है कि छोटे शहरों में ऐसे अवसर पर्याप्त मात्रा में क्यों नहीं पैदा हो पा रहे हैं।

झारखंड, बिहार, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कई छोटे शहरों में पढ़ाई पूरी करने के बाद युवाओं के सामने सबसे बड़ा सवाल रोजगार का होता है। स्थानीय स्तर पर नौकरियां सीमित हैं, निजी क्षेत्र का विस्तार अपेक्षाकृत धीमा है और कई पेशों में आगे बढ़ने के लिए बड़े शहरों का रुख करना पड़ता है। पत्रकारिता, विज्ञापन, मीडिया, तकनीक और कॉरपोरेट क्षेत्र में करियर बनाने वाले युवाओं के लिए यह स्थिति और स्पष्ट दिखाई देती है। प्रतिभा की कमी नहीं है, लेकिन प्रतिभा को पहचानने और उसे आगे बढ़ाने वाला अवसर हर जगह उपलब्ध नहीं है।

इस पलायन की कीमत केवल युवा नहीं चुकाते। पीछे छूट जाते हैं माता-पिता, जिनके लिए बच्चों का दूर रहना भावनात्मक चुनौती बन जाता है। छोटे भाई-बहनों के लिए घर में मौजूद एक सहारा कम हो जाता है। कई परिवार अपनी सीमित बचत का बड़ा हिस्सा बच्चों के किराए, पढ़ाई और रहने-खाने पर खर्च करते हैं। दूसरी ओर, छोटे शहर भी अपने शिक्षित और महत्वाकांक्षी युवाओं से वंचित होते जाते हैं। वहां की अर्थव्यवस्था, स्थानीय उद्यम और सामाजिक जीवन उस ऊर्जा से पूरी तरह लाभ नहीं उठा पाते, जिसे युवा अपने साथ बाहर ले जाते हैं।

हालांकि, हर पलायन को समस्या मानना भी उचित नहीं होगा। शिक्षा, अनुभव और बेहतर अवसरों के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाना विकास का हिस्सा है। असली चिंता तब पैदा होती है, जब किसी युवा के सामने आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता अपना शहर छोड़ना रह जाता है। चुनाव और मजबूरी के बीच का यही अंतर समझना जरूरी है।

सरकारों को इस दिशा में केवल योजनाओं की घोषणा करने के बजाय उनके वास्तविक परिणामों पर ध्यान देना होगा। छोटे शहरों में उद्योगों को प्रोत्साहन, स्थानीय उद्यमियों को आसान ऋण, गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और बेहतर डिजिटल सुविधाएं उपलब्ध कराना जरूरी है।

साथ ही, जिला स्तर पर ऐसे रोजगार केंद्र विकसित किए जाने चाहिए, जहां निजी कंपनियां, शिक्षण संस्थान और स्थानीय प्रतिभाएं एक-दूसरे से जुड़ सकें। हर शहर को महानगर बनाने की जरूरत नहीं, लेकिन हर शहर में सम्मानजनक रोजगार की संभावना जरूर होनी चाहिए।

विकास का अर्थ केवल ऊंची इमारतें, चौड़ी सड़कें और चमकते बाजार नहीं हैं।

विकास तब सार्थक होगा, जब किसी छोटे शहर का युवा अपने भविष्य का फैसला अवसरों को देखकर करे, मजबूरी में अपना घर छोड़ने के लिए नहीं। देश की प्रतिभा को आगे बढ़ने के लिए बाहर जाने की स्वतंत्रता जरूर मिलनी चाहिए, लेकिन उसे अपने शहर में रहकर आगे बढ़ने का विकल्प भी मिलना चाहिए।

आखिर सवाल यह नहीं है कि युवा बड़े शहरों में क्यों जा रहे हैं, बल्कि यह है कि उनके अपने शहर उन्हें रोक पाने लायक अवसर क्यों नहीं दे पा रहे हैं।

विचार लेख

GeM के 10 साल : युवा भारत के लिए सरकारी कारोबार की 10 सीख

● प्रदीप सैनी

अवसर से ऑर्डर तक, और ऑर्डर से भुगतान तक—हर सप्ताह एक कम-जाना नियम

भाग 6

ATC में लिखा है... तो क्या हर शर्त माननी ही पड़ेगी?

Brand, Experience, Certificate से Delivery तक—एक छोटी-सी ATC कई बार पूरी Bid और Profit दोनों तय कर देती है।

प्रदीप सैनी

GeM पर एक युवा Seller ने Bid खोली। Product सही था, quantity अच्छी थी और Rate देने की तैयारी भी पूरी थी। लेकिन अनुभवी Seller Rate डालने से पहले एक काम जरूर करता है—ATC पढ़ता है। ATC यानी Additional Terms & Conditions। यही वह हिस्सा है जहां Buyer अपनी वास्तविक procurement requirement के अनुसार अतिरिक्त शर्तें बताता है।

लेकिन कई बार Bid जीतने या reject होने का असली कारण Rate नहीं, ATC की कोई छोटी-सी line बन जाती है।

इसलिए पहला नियम—ATC को केवल पढ़िए नहीं, समझिए भी। Brand लिखा है तो कारण देखिए।

सामान्य competitive procurement में किसी खास Brand, Make या Model तक competition सीमित करने वाली condition को Seller को ध्यान से जांचना चाहिए। कुछ मामलों में genuine compatibility या विशेष procurement requirement हो सकती है, इसलिए context समझना जरूरी है।

Experience मांगा है तो उसकी relevance देखिए।

"Similar work experience required" और "Experience केवल इसी Department का होना चाहिए"—दोनों एक जैसी बातें नहीं हैं। Experience clause में काम की nature, period, value और acceptable organisation जरूर देखें।

ATC पढ़ते समय 7 बातें जरूर जांचें:

1. Experience
2. Turnover
3. OEM / Authorization
4. Certificates / Test Reports
5. Delivery Period और Location
6. Warranty / Service
7. EMD, Performance Security, Sample, Inspection और Payment Conditions

Seller को केवल यह नहीं पूछना चाहिए—"क्या मैं Bid भर सकता हूं?"

उसे यह भी पूछना चाहिए—

"अगर Bid जीत गया, तो क्या मैं हर शर्त समय पर और लाभ के साथ पूरी कर पाऊंगा?"

Certificate देखकर भी तुरंत Bid छोड़ना सही नहीं। पहले यह समझिए कि certificate Product, Manufacturer या Bidder—किसके नाम पर मांगा गया है और relevant equivalent standard क्या है।

सबसे ज्यादा ध्यान Delivery Clause पर दीजिए। कम Rate देकर L1 बनना आसान है, लेकिन यदि दूसरे शहर में जल्दी supply, installation, inspection और onsite warranty भी करनी है, तो असली cost बदल सकती है।

ATC केवल eligibility नहीं बताती, वह आपका Profit और Risk भी तय करती है। और यदि कोई condition अस्पष्ट लगे, तो समय रहते Clarification/Representation का रास्ता अपनाया जा सकता है। इसका उद्देश्य Buyer से टकराव नहीं, बल्कि requirement को स्पष्ट करना है।

भाग 6 की चार जरूरी सीख—

Brand लिखा है तो कारण देखिए।

Experience मांगा है तो relevance देखिए।

Certificate मांगा है तो applicability जांचिए।

और कोई शर्त अस्पष्ट लगे तो समय रहते clarification लीजिए।

क्योंकि GeM पर अच्छी Bid वही नहीं जिसमें Rate सबसे कम हो—अच्छी Bid वह है जिसकी हर शर्त आप नियमों के अनुसार, समय पर और लाभ के साथ पूरी कर सकें।

अगली कड़ी — भाग 7

"OEM नहीं हैं... तो क्या GeM पर कारोबार नहीं कर सकते?"

Manufacturer, Reseller, OEM Authorization और Experience Exemption—अगले भाग में समझेंगे वह फर्क जिसमें नए Seller सबसे ज्यादा उलझते हैं।

GeM
Government
e Marketplace
Procurement Reimagined
Efficient • Transparent • Inclusive

एमपीपीएससी (MPPSC) की सरकारी नौकरी छोड़ मार्शल आर्ट्स को बनाया जीवन, जानिए विक्रम पुरस्कार से सम्मानित विकास शर्मा की कहानी



मध्य प्रदेश का गौरव: एक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी से लेकर 100 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय चैंपियन तराशने वाले दिग्गज प्रशिक्षक का शानदार सफर, एक चैंपियन जिसने तराशे 100 से ज्यादा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता।

● प्रकाश त्रिपाठी

एक नायक जिसने तराशे 100 से ज्यादा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता

'मार्शल आर्ट्स के जरिए जीवन बदलने' के महान लक्ष्य के साथ कार्य करने वाले हमारे इस विशेष अंक के मुख्य अतिथि किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।

मध्य प्रदेश शासन के सर्वोच्च खेल सम्मान 'विक्रम पुरस्कार' से सम्मानित इस शख्सियत ने न सिर्फ एक खिलाड़ी के रूप में देश का गौरव बढ़ाया है, बल्कि एक प्रशिक्षक (कोच) के तौर पर प्रदेश की माटी से विश्व स्तरीय विजेता भी तराशे हैं।

इनका खेल करियर उपलब्धियों और पदकों से भरा पड़ा है। एक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी के रूप में इन्होंने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर 80 से अधिक स्वर्ण पदक अपने नाम किए हैं। राष्ट्रीय खेलों में कराटे के अंदर मध्य प्रदेश के इतिहास में सबसे अधिक स्वर्ण और रजत पदक जीतने का कीर्तिमान भी इन्हीं के नाम दर्ज है।

अंतरराष्ट्रीय पटल पर इन्होंने दक्षिण एशियाई खेलों में कांस्य पदक और राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ) चैंपियनशिप में रजत पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया। इसके अलावा 2010 के एशियाई खेलों (चीन) में अपनी दावेदारी पेश की और 3 विश्व व 3 एशियाई चैंपियनशिप में भारत का कुशल प्रतिनिधित्व किया।

एक बेहतरीन खिलाड़ी होने के साथ-साथ वे वर्तमान में 'मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स' (एमएमए) इंडिया टीम के एक असाधारण प्रशिक्षक भी हैं।

उन्होंने 100 से अधिक राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार किए हैं और प्रदेश के 100 से ज्यादा खिलाड़ियों को इस विधा में पारंगत किया है।

उनके शानदार मार्गदर्शन में 12 खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है और 64 अन्य खिलाड़ियों ने इस खेल में भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

इसी बेहतरीन प्रशिक्षण का नतीजा है कि आज कई युवा खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर झंडे गाड़ रहे हैं। तराशे गए प्रमुख होनहारों में सुरभि शुक्ला ने एशियाई चैंपियनशिप में रजत और विश्व चैंपियनशिप में कांस्य हासिल किया है।

रेवा भदौरिया ने एशियाई चैंपियनशिप में कांस्य जीता है, जबकि आदित्य देव त्रिपाठी, यश चेड़वाल और प्रिंस पांडे इन तीनों ही खिलाड़ियों ने विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतकर अपनी ताकत का अहसास कराया है।

विश्व पटल पर स्वर्णिम इतिहास:

आर्या चौधरी ने भारत को दिलाया पहला स्वर्ण पदक मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स (एमएमए) की उदीयमान खिलाड़ी आर्या चौधरी ने अपने गुरु विकास शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में वह कीर्तिमान स्थापित किया है, जिससे समूचे राष्ट्र का मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया है।

17 से 20 सितंबर तक अफ्रीकी देश अंगोला में आयोजित प्रतिष्ठित 'विश्व कप' में अदम्य साहस और उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करते हुए आर्या ने विश्व चैंपियन का ताज और स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

इस अभूतपूर्व विजय के साथ ही वे इस वैश्विक महाकुंभ में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतने वाली प्रथम भारतीय खिलाड़ी बन गई हैं। गुरु विकास शर्मा के कठोर प्रशिक्षण और आर्या की अटूट साधना ने मध्य प्रदेश का नाम वैश्विक पटल पर सुनहरे अक्षरों में उकेर दिया है।

गौरवमयी उपलब्धि



आर्या चौधरी ने विश्व कप (वर्ल्ड कप) में जीता स्वर्ण पदक
कोच विकास शर्मा के "ट्रांसफॉर्मिंग लाइव्स थ्रू मार्शल आर्ट्स" (युद्ध कला के माध्यम से जीवन का कायाकल्प) विजन का सबसे बेहतरीन उदाहरण हैं युवा चैंपियन आर्या चौधरी।
विकास शर्मा के कठोर प्रशिक्षण और रणनीतिक मार्गदर्शन में आर्या ने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विश्व पटल पर भारत का नाम रोशन किया है।
हाल ही में 17 से 19 सितंबर तक दक्षिण अफ्रीका के अंगोला में आयोजित मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स (एमएमए) वर्ल्ड कप में आर्या चौधरी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक (गोल्ड मेडल) पर क जा जमाया है।
उनकी यह ऐतिहासिक जीत यह दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन और दृढ़ इच्छाशक्ति से प्रदेश की बेटियां विश्व स्तर पर कोई भी मुकाम हासिल कर सकती हैं। आर्या की यह उपलब्धि आत्मरक्षा (सेल्फ डिफेंस) और खेल जगत में अपना भविष्य (करियर) बनाने वाली अन्य बालिकाओं के लिए एक बहुत बड़ी प्रेरणा है।

विशेष साक्षात्कार

रूबरू: जब हमारे कार्यकारी संपादक प्रकाश त्रिपाठी ने की विकास शर्मा जी से विशेष बातचीत



प्रश्न 1: विकास जी, वर्तमान समय में महिला सुरक्षा एक अहम मुद्दा है, ऐसे में आत्मरक्षा (सेल्फ डिफेंस) में युद्ध कला (मार्शल आर्ट्स) किस तरह एक बड़ा बदलाव ला सकती है?

उत्तर: हाँ, वास्तव में महिला सुरक्षा एक बहुत ही महत्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दा है। यही कारण है कि सरकार इस मुद्दे को लेकर बहुत कठोर निर्णय लेती रही है, वर्तमान में भी ले रही है और भविष्य में भी लिए जाएँगे। लेकिन केवल सरकार या किसी प्रकार की समाज सेवी संस्थाएं ही इसके बारे में सोचें, यह ठीक नहीं होगा। इस विषय पर अभिभावकों और स्वयं बालिकाओं एवं महिलाओं को सोचने और तैयार होने की आवश्यकता है। इसमें विशेष रूप से युद्ध कला (मार्शल आर्ट्स) का प्रशिक्षण आत्मरक्षा (सेल्फ डिफेंस) हेतु विशेष भूमिका निभा सकता है। युद्ध कला केवल खेल ही नहीं, बल्कि स्वतंत्र रूप से जीवन जीने का तरीका भी सिखाता है। इसका अभ्यास करके आप केवल स्वस्थ ही नहीं होते, बल्कि मानसिक तौर पर हर परिस्थिति से निपटने और उसका सामना करने के लिए तैयार हो जाते हैं। मैं कुछ ऐसी बालिकाओं को प्रशिक्षित करता हूँ जो स्कूल या कॉलेज की पढ़ाई के साथ-साथ प्रतियोगिताओं में भाग लेकर प्रदेश एवं देश को पदक दिलाकर गौरवान्वित कर रही हैं। ये बालिकाएं केवल खेल के मैदान में ही नहीं, बल्कि दैनिक जीवन में भी किसी अप्रत्याशित मुसीबत का सामना करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हैं।

प्रश्न 2: आपने मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) के माध्यम से एक सुरक्षित सरकारी नौकरी हासिल की थी, ऐसी क्या वजह रही कि आपने वह छोड़ने का बड़ा फैसला किया?

उत्तर: जी हाँ, मैं अत्यंत गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि मध्य प्रदेश शासन द्वारा मेरी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों को देखते हुए वर्ष 2008 में मुझे 'विक्रम पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए उत्कृष्ट खिलाड़ी घोषित किया गया। मध्य प्रदेश शासन का प्रावधान है कि उत्कृष्ट खिलाड़ी को शासकीय सेवा में नियुक्ति दी जाती है, तो इस आधार पर मुझे इंदौर शहर में स्थित मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) में नियुक्ति प्रदान की गई। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि जब भी किसी खिलाड़ी को उत्कृष्ट खिलाड़ी घोषित किया जाता है, वह अपने खेल के प्रदर्शन (परफॉर्मेंस) में चरम पर रहता है। ऐसे में उसे नौकरी प्रदान कर, उसका खेल रुकवाकर शासन द्वारा नौकरी करने के लिए कहा जाता है, तो उसे कुछ हद तक आर्थिक तौर पर तो मजबूती मिलती है, लेकिन वहीं उसकी खेल प्रतिभा का एक तरीके से गला घोंट दिया जाता है। एक लंबे समय तक नौकरी करने के बाद मुझे अहसास हुआ कि मैं खेल और नौकरी दोनों एक साथ नहीं कर सकता। तो मैंने नौकरी को छोड़कर खेल को चुना और वर्तमान में पूर्ण रूप से खिलाड़ियों को तैयार करने में मेहनत कर रहा हूँ।

प्रश्न 3: मिश्रित युद्ध कला (मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स - एमएमए) जैसे खेल को अक्सर लोग बहुत ही आक्रामक और हिंसक खेल मानते हैं, लेकिन एक खिलाड़ी इस खेल से ज्यादा से ज्यादा सीख कर इसका सही लाभ कैसे उठा सकता है?

उत्तर: इस खेल को लोग बहुत आक्रामक खेल समझते हैं, यह एकदम गलत सोच है। बल्कि इस खेल के अभ्यास के द्वारा तो स्वाभाविक रूप से आक्रामक रहने वाले बच्चे शालीन और मानसिक तौर पर शांत होने के साथ-साथ अनुशासित (डिसिप्लिन्ड) हो जाते हैं। आप कोई भी पुरानी खबर हो या कहानी देख या पढ़ लीजिए, आप ऐसा बहुत ही कम पाएंगे कि किसी खिलाड़ी द्वारा किसी अन्य सामान्य व्यक्ति को तकलीफ पहुंचाई गई हो। इसका कारण यह है कि एक खिलाड़ी के तौर पर जब हम खेल के मैदान में अभ्यास करते हैं, तो यही सीखते हैं कि किस प्रकार अपने प्रतिद्वंद्वी पर दिमाग संतुलित रखते हुए सही वार किया जाए, जिससे खेल के क्षेत्र में अधिक से अधिक अंक प्राप्त करते हुए मैच को जीता जा सके। हाँ, और यदि किसी खिलाड़ी द्वारा अगर किसी को आहत किया गया होगा, तो वह निश्चय ही स्वयं के बचाव अर्थात् आत्मरक्षा (सेल्फ डिफेंस) के रूप में किया गया होगा।

प्रश्न 4: आपने मध्य प्रदेश और देश के लिए 100 से ज्यादा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी तैयार किए हैं, नए युवाओं को इस मुकाम तक पहुँचाने के पीछे आपका मूल मंत्र क्या है?

उत्तर: प्रदेश या देश के लिए खेलना और पदक हासिल करना निश्चय ही एक गौरवान्वित विषय रहा है। इसके पीछे कड़ी मेहनत और लगन के साथ-साथ विश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मैं मेरे खेल के शुरुआती समय में लंबे समय तक पदक जीतने में असमर्थ रहा, जिसके कई कारण हो सकते हैं—जैसे पर्याप्त मेहनत की कमी या खेल के प्रति समर्पित न होना। लेकिन एक उम्र के पश्चात वह समझदारी आती गई जो कि हम आस-पास के वातावरण, खेल प्रशिक्षक और अपने साथी खिलाड़ियों से सीखते हैं।

प्रश्न 5: 2010 एशियाई खेल (एशियन गेम्स) और राष्ट्रमंडल खेल (कॉमनवेल्थ गेम्स) जैसे बड़े अंतरराष्ट्रीय मंचों पर खेलने के अपने अनुभवों को आप अपने प्रशिक्षण के दौरान खिलाड़ियों के साथ कैसे साझा करते हैं?

उत्तर: एशियाई खेल (एशियन गेम्स) और दक्षिण एशियाई खेल (साउथ एशियन गेम्स) जैसी बड़ी प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व करना किसी भी खिलाड़ी का सपना रहता है। इस सपने को साकार करने में मेरे कोच 'शिहान जयदेव शर्मा सर' का सर्वाधिक योगदान रहा। शिविर (कैम्प) के दौरान अंतरराष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण (कोचिंग) भी प्राप्त हुआ, साथ ही मेरे सीनियर और साथी खिलाड़ियों से भी बहुत कुछ सीखने को मिला। ये सभी तजुर्बे मेरे लिए नये खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान करने में बहुत लाभकारी हैं। जिस प्रकार मैं विभिन्न प्रतियोगिताओं में एक खिलाड़ी के रूप में नई-नई चुनौतियों का सामना करना, तकनीकी गलतियाँ करना या किसी प्रकार का प्रयोग (एक्सपेरिमेंट) करना हो—इन सभी बातों का ध्यान रखते हुए मैं खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करता हूँ। एक खिलाड़ी के तौर पर मैंने हर पहलू को महसूस किया है, जिसका मुझे कोच के रूप में बहुत लाभ मिलता है। हर परिस्थिति के लिये मेरे पास उदाहरण रहता है जिससे मुझे खिलाड़ियों को सिखाने में मदद मिलती है।

प्रश्न 6: "युद्ध कला के माध्यम से जीवन का कायाकल्प" (ट्रांसफॉर्मिंग लाइव्स थ्रू मार्शल आर्ट्स) के अपने इस दृष्टिकोण (विजन) के तहत, आप आने वाले समय में मध्य प्रदेश में मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स का क्या भविष्य देखते हैं?

उत्तर: युद्ध कला (मार्शल आर्ट्स) केवल एक खेल नहीं है, यह खेल के साथ एक कला भी है जो कि हमें जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में भी सहायक है—जैसे खेल, आत्मरक्षा, मानसिक और शारीरिक तंदुरुस्ती (मेंटल एंड फिजिकल फिटनेस)। यही कारण है कि यह बहुत कम समय में पूरी दुनिया में गजब की लोकप्रियता हासिल कर चुका है। वर्तमान में बढ़ रहे विभिन्न प्रकार के अपराधों से निपटने और आत्मरक्षा को ध्यान में रखते हुए बच्चों के अभिभावक/माता-पिता इन खेलों में विशेष रुचि दिखा रहे हैं। आज कई बच्चे आजीविका (करियर) के तौर पर इस खेल को चुन रहे हैं। मध्यप्रदेश के लगभग हर जिले में खिलाड़ी तैयार हो रहे हैं जिससे आने वाले समय में प्रतिस्पर्धा (कम्पटीशन) का स्तर बढ़ेगा और खिलाड़ी अपने प्रदेश और देश का नाम एशियाई खेलों में भी निश्चय ही रोशन करेंगे। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता खिलाड़ियों को सम्मान स्वरूप आर्थिक पुरस्कार के साथ स्कूल एवं कॉलेज में विशेष पहचान (रिकॉग्निशन) प्राप्त होता है, नौकरी के समय पर भी खिलाड़ियों को विशेष ध्यान (स्पेशल अटेंशन) मिलता है। सरकार की नीतियों के अनुसार खिलाड़ियों को विशेष लाभ दिए जा रहे हैं जिससे कि खिलाड़ी और बेहतर प्रदर्शन कर देश का नाम रोशन कर सकें।



बारिश ने धोई भारत की उम्मीदें

वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज 2-2 से बराबर, टूटा 4 साल का घरेलू रिकॉर्ड



नई दिल्ली। भारत और वेस्टइंडीज के बीच खेली जा रही पांच मैचों की टी-20 सीरीज का अंत बेहद निराशाजनक तरीके से हुआ। निर्णायक और पांचवां मुकाबला बारिश की भेंट चढ़ गया, जिसके चलते मैच को रद्द करना पड़ा।

इस रद्दीकरण के साथ ही दोनों टीमों को ट्रॉफी साझा करनी पड़ी और सीरीज 2-2 की बराबरी पर समाप्त हुई। इसके साथ ही टीम इंडिया का अपने घरेलू मैदान पर लगातार सीरीज जीतने का चार साल का शानदार अजेय रिकॉर्ड भी टूट गया।

यह बहुप्रतीक्षित खिताबी मुकाबला प्रशंसकों के लिए भारी उत्साह का केंद्र था। शुरुआती चार मैचों के बाद दोनों टीमें 2-2 की बराबरी पर थीं और यह फाइनल मैच सीरीज का विजेता तय करने वाला था।

स्टेडियम में दर्शकों की भारी भीड़ थी, लेकिन मौसम ने पूरा खेल बिगाड़ दिया। लगातार तेज बारिश के कारण आउटफील्ड बुरी तरह गीला हो गया। अंपायरों ने मैदान का कई बार निरीक्षण किया, लेकिन खेलने के लिए सुरक्षित स्थिति न होने के कारण अंतत: मैच को रद्द करने का फैसला सुनाया।

भारतीय क्रिकेट टीम के लिए यह ड्रॉ किसी हार से कम नहीं है। पिछले चार सालों में यह पहली बार है जब टीम इंडिया अपने घरेलू मैदान पर कोई द्विपक्षीय टी-20 सीरीज जीतने में नाकाम रही है।

इससे पहले भारत ने अपने घर में खेलते हुए लगातार दबदबा बनाए रखा था। दूसरी ओर, वेस्टइंडीज की टीम ने इस सीरीज में शानदार खेल दिखाया और भारतीय टीम को उसी के घर में कड़ी टक्कर दी।

भले ही बारिश के कारण भारत सीरीज जीतने से चूक गया, लेकिन इस टूर्नामेंट में युवा खिलाड़ियों का प्रदर्शन एक सकारात्मक पहलू रहा। अब भारतीय टीम को अपनी रणनीतियों पर मंथन करना होगा ताकि भविष्य के टूर्नामेंट्स में घरेलू दबदबा फिर से कायम किया जा सके।

आईपीएल 2027: दिल्ली कैपिटल्स के 'गुरु' बने युवराज सिंह, गांगुली के साथ रचेंगे इतिहास



नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) के आगामी 2027 सीजन से पहले दिल्ली कैपिटल्स ने एक बड़ा मास्टरस्ट्रोक खेला है। भारतीय क्रिकेट इतिहास के सबसे बड़े मैच-विनर और 'सिक्सर किंग' युवराज सिंह अब डगआउट में रणनीति बनाते नजर आएंगे।

दिल्ली कैपिटल्स ने आधिकारिक तौर पर युवराज को टीम का नया असिस्टेंट और बैटिंग कोच नियुक्त किया है। यह युवराज के करियर का पहला औपचारिक कोचिंग असाइनमेंट है।

'दादा' और 'युवी' की कल्ट जोड़ी फिर साथ

इस नियुक्ति की सबसे खास बात यह है कि युवराज सिंह एक बार फिर अपने पहले कप्तान सौरव गांगुली के साथ काम करेंगे। दिल्ली कैपिटल्स ने हाल ही में गांगुली को अपना हेड कोच नियुक्त किया है।

युवराज ने साल 2000 में गांगुली की कप्तानी में ही इंटरनेशनल डेब्यू किया था। अब 26 साल बाद, यह प्रतिष्ठित जोड़ी दिल्ली कैपिटल्स को उसका पहला आईपीएल खिताब जिताने के मिशन पर एक साथ काम करेगी।

11 साल बाद दिल्ली में वापसी

युवराज सिंह का दिल्ली फ्रेंचाइजी से पुराना नाता रहा है। साल 2015 के आईपीएल ऑक्शन में तब की दिल्ली डेयरडेविल्स (अब दिल्ली कैपिटल्स) ने युवराज को रिकॉर्ड 16 करोड़ रुपये में खरीदा था।

अब 11 साल बाद वह खिलाड़ी के रूप में नहीं, बल्कि मेंटर और कोच के रूप में दिल्ली के खेमे में वापस लौटे हैं।

युवाओं को निखारने का बेजोड़ अनुभव

भले ही युवराज पहली बार किसी टीम के मुख्य कोचिंग स्टाफ का हिस्सा बने हों, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने युवा प्रतिभाओं को तराशने में अद्भुत भूमिका निभाई है। टीम इंडिया के मौजूदा सितारे शुभमन गिल, अभिषेक शर्मा और प्रभसिमरन सिंह जैसे आक्रामक बल्लेबाजों की सफलता के पीछे युवराज की व्यक्तिगत मेंटरशिप का बड़ा हाथ रहा है।

दिल्ली की टीम में मौजूद युवाओं को उनके इस बेजोड़ अनुभव का सीधा फायदा मिलेगा।

खिताब का सूखा खत्म करने की चुनौती

दिल्ली कैपिटल्स को अब भी अपने पहले आईपीएल खिताब का इंतजार है। ऐसे में 2007 टी20 वर्ल्ड कप और 2011 वनडे वर्ल्ड कप के हीरो रहे युवराज सिंह का टीम से जुड़ना दिल्ली के लिए 'विनिंग माइंडसेट' लाने की दिशा में सबसे बड़ा कदम माना जा रहा है।

न्यूज़ीलैंड दौरे के लिए टीम इंडिया का ऐलान: टेस्ट में बुमराह की वापसी, वनडे में गिल और अय्यर संभालेंगे साझा कप्तानी



नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) ने आगामी न्यूज़ीलैंड दौरे के लिए भारतीय क्रिकेट टीम की घोषणा कर दी है। इस टीम चयन में सिलेक्टर्स ने दो बड़े और चौंकाने वाले फैसले लिए हैं। सबसे बड़ी राहत की खबर तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की टेस्ट टीम में वापसी है, जबकि वनडे सीरीज के लिए कप्तानी का एक बिल्कुल नया प्रयोग करते हुए शुभमन गिल और श्रेयस अय्यर को संयुक्त रूप से (शेयरिंग) कप्तान बनाया गया है।

एक साल बाद सफेद जर्सी में दिखेंगे यॉर्कर किंग बुमराह चोट के कारण लंबे समय तक मैदान से दूर रहने वाले भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पूरे एक साल बाद टेस्ट टीम में लौट आए हैं। लंबे रिहैब और फिटनेस टेस्ट पास करने के बाद उनकी यह बहुप्रतीक्षित वापसी भारतीय पेस अटैक के लिए किसी संजीवनी से कम नहीं है।

न्यूज़ीलैंड की तेज, उछाल भरी और सीमिंग पिचों पर बुमराह का अनुभव और उनकी धारदार गेंदबाजी कीवी बल्लेबाजों के लिए सबसे बड़ा खतरा साबित होगी।

विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (WTC) के आगामी मैचों को देखते हुए भी टीम मैनेजमेंट के लिए बुमराह का फिट होना बेहद अहम है।

वनडे में 'लीडरशिप' का नया फॉर्मूला टेस्ट टीम के उलट, सीमित ओवरों के प्रारूप (वनडे) में चयनकर्ताओं ने भविष्य को ध्यान में रखते हुए एक बड़ा और अनोखा दांव चला है।

न्यूज़ीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में कप्तानी का जिम्मा किसी एक खिलाड़ी को नहीं सौंपा गया है, बल्कि युवा ओपनर शुभमन गिल और मध्यक्रम के मजबूत स्तंभ श्रेयस अय्यर मिलकर कप्तानी साझा करेंगे। भारतीय क्रिकेट के इतिहास में 'शेयरिंग कैप्टेंसी' का यह प्रयोग दुर्लभ है।

इस फैसले से साफ है कि बोर्ड इन दोनों युवा सितारों में भविष्य का लीडर देख रहा है और विदेशी सरजमीं पर उनके नेतृत्व कौशल को परखना चाहता है।

मनोरंजनम्

बॉक्स ऑफिस पर 'नयी नवेली' और 'प्रहार' का टकराव

दोनों फिल्मों की कमाई और दर्शकों की पसंद पर टिकी निगाहें, पहले दिन के प्रदर्शन से तय होगी आगे की राह



● अक्षय चौहान

मुंबई। भारतीय सिनेमा के गलियारों में इस समय उत्सव और त्योहारों के माहौल के साथ-साथ बॉक्स ऑफिस पर एक दिलचस्प मुकाबला देखने को मिल रहा है। हाल ही में सिनेमाघरों में रिलीज हुई दो अलग-अलग जॉनर की फ़िल्में, एक तरफ यामी गौतम स्टारर 'नयी नवेली' तो वहीं दूसरी ओर राजकुमार राव की मुख्य भूमिका वाली 'प्रहार' ने आते ही दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। ट्रेड एनालिस्ट्स इन दोनों फिल्मों के शुरुआती आंकड़ों और दर्शकों की प्रतिक्रिया पर अपनी पैनी नजर बनाए हुए हैं।

यामी गौतम और आदिनाथ कोठारे की मुख्य भूमिका से सजी फैंटेसी और पारिवारिक ड्रामा फिल्म 'नयी नवेली' ने बॉक्स ऑफिस पर धीमी लेकिन स्थिर शुरुआत करते हुए पहले दो दिनों में लगभग सात करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर लिया है। फिल्म के निर्देशक और इसकी अनूठी कहानी को लेकर दर्शकों के बीच मिली-जुली प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है, लेकिन इसके बावजूद वीकेंड पर सिनेमाघरों में टिकट खिड़की पर ठीक-ठाक चहल-पहल बनी हुई है। मुख्य अभिनेत्री ने हाल ही में एक इंटरव्यू में कहा कि दर्शकों का सिनेमाघरों तक पहुंचना ही कलाकारों के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है।

वहीं दूसरी ओर, निर्देशक अविनाश अरुण धवारे के निर्देशन में बनी और राजकुमार राव तथा जयदीप अहलावत स्टारर फिल्म 'प्रहार: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ उज्ज्वल निकम' ने भी सिनेमाप्रेमियों को गहराई से प्रभावित किया है।

यह फिल्म देश के जाने-माने पब्लिक प्रॉसिक्यूटर उज्ज्वल निकम के जीवन और 26/11 के मुंबई हमलों में पकड़े गए आतंकवादी अजमल कसाब के कानूनी मुकदमों के संघर्ष पर आधारित है।

गंभीर सिनेमा पसंद करने वाले दर्शकों के बीच इस थ्रिलर और कोर्टरूम ड्रामा को काफी सराहा जा रहा है। फिल्म ने शुरुआती दो दिनों में पांच करोड़ रुपये से अधिक की कमाई कर ली है और क्रिटिक्स इसकी पटकथा तथा दमदार अभिनय की खुलकर तारीफ कर रहे हैं। फिल्म ट्रेड एक्सपर्ट्स का मानना है कि इस बार का अक्टूबर का महीना काफी विविधतापूर्ण रहा है। एक तरफ जहां पारंपरिक और हल्के-फुल्के मनोरंजन का तड़का है, वहीं दूसरी तरफ सच्ची घटनाओं पर आधारित गंभीर कहानियों को भी दर्शक मिल रहे हैं। आने वाले हफ्तों में कई और बड़ी फिल्में कतार में हैं, जिसके चलते यह मुकाबला और अधिक रोमांचक होने की उम्मीद है।

कुल मिलाकर, यह हफ्ता भारतीय बॉक्स ऑफिस के लिए बेहद सकारात्मक संकेत दे रहा है, जो यह साबित करता है कि दर्शक अब केवल बड़े बजट की मसाला फिल्में ही नहीं, बल्कि बेहतरीन विषय और मजबूत पटकथा वाली कहानियों को भी पूरा समर्थन दे रहे हैं।

'ओम: चैप्टर 1' में पहली बार साथ दिखेंगे धनुष और ममूटी

पहली बार पर्दे पर साथ दिखेंगे धनुष और ममूटी, 'ओम: चैप्टर 1' का ऐलान



मुंबई। साउथ सिनेमा के दो दिग्गज अभिनेता, धनुष और ममूटी जल्द ही बड़े पर्दे पर एक साथ नजर आने वाले हैं। ये दोनों सुपरस्टार आगामी फिल्म **'ओम: चैप्टर 1: उधिरम द ब्लड टुड'** में पहली बार स्क्रीन साझा करेंगे। इस बहुप्रतीक्षित फिल्म का निर्देशन राजकुमार पेरियासामी कर रहे हैं, जो इससे पहले शिवकार्तिकेयन की सफल फिल्म 'अमरन' का निर्देशन कर चुके हैं। 'ओम' के जरिए धनुष और पेरियासामी भी पहली बार एक साथ काम कर रहे हैं।

आम एक्शन फिल्मों से अलग होगी कहानी

निर्देशक राजकुमार पेरियासामी ने स्पष्ट किया है कि यह फिल्म आम अपराध या एक्शन वाली कहानियों से बिल्कुल अलग होगी। फिल्म में दोस्ती, गहरी भावनाओं और अपराध की काली दुनिया को एक बहुत ही गंभीर और यथार्थवादी अंदाज में पेश किया जाएगा।

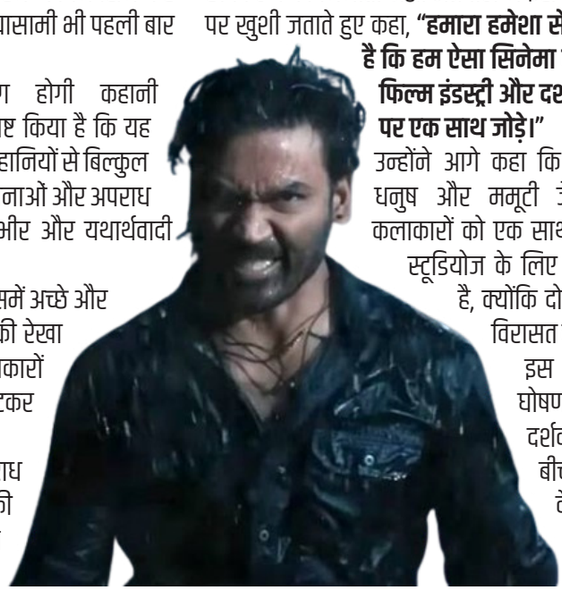
फिल्म की सबसे खास बात यह है कि इसमें अच्छे और बुरे (नायक और खलनायक) के बीच की रेखा बिल्कुल साफ नहीं होगी। सभी कलाकारों ने अपने सामान्य अभिनय से हटकर चुनौतीपूर्ण किरदार निभाए हैं।

हालांकि यह फिल्म वास्तविक अपराध की घटनाओं से प्रेरित है, लेकिन इसकी दुनिया और कहानी पूरी तरह से काल्पनिक होगी। कहानी में किरदारों को केवल 'हीरो' या 'विलेन' के रूप में नहीं, बल्कि परिस्थितियों के आधार पर फैसले लेने वाले इंसानों के रूप में दिखाया गया है।

निर्माताओं के लिए खास पल

इस फिल्म का निर्माण 'आरटेक स्टूडियोज' द्वारा किया जा रहा है। फिल्म की निर्माता श्रद्धा अग्रवाल ने इस बड़े कोलैबोरेशन पर खुशी जताते हुए कहा, **"हमारा हमेशा से यह विजन रहा है कि हम ऐसा सिनेमा बनाएं जो लोगों, फिल्म इंडस्ट्री और दर्शकों को बड़े स्तर पर एक साथ जोड़े।"**

उन्होंने आगे कहा कि 'ओम' के लिए धनुष और ममूटी जैसे असाधारण कलाकारों को एक साथ लाना आरटेक स्टूडियोज के लिए बेहद खास पल है, क्योंकि दोनों की सिनेमाई विरासत बेहद शानदार है।



इस नई फिल्म की घोषणा के बाद से ही दर्शकों और फैंस के बीच भारी उत्साह देखने को मिल रहा है।

फ्रांस में महंगाई और शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ सड़कों पर उतरे लाखों लोग, कई शहरों में हिंसक झड़पें



● मयंक आनंद

फ्रांस। फ्रांस में बढ़ती महंगाई, सार्वजनिक सेवाओं की बदहाल स्थिति और शिक्षा व्यवस्था को लेकर असंतोष ने 17 अक्टूबर को व्यापक विरोध प्रदर्शनों का रूप ले लिया। देश के विभिन्न हिस्सों में लाखों लोग सड़कों पर उतरे।

कई शहरों में प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच हिंसक झड़पें हुईं, जिसके बाद पुलिस को आंसू गैस और पानी की बौछारों का इस्तेमाल करना पड़ा। इस घटनाक्रम ने फ्रांस की आंतरिक राजनीति और सरकार की नीतियों को लेकर नई बहस छेड़ दी है।

110 से अधिक स्थानों पर प्रदर्शन

एसोसिएटेड प्रेस (एपी) की रिपोर्ट के अनुसार, देशभर में लगभग 5.5 लाख से 8 लाख लोगों ने 110 स्थानों पर आयोजित मार्च और प्रदर्शनों में हिस्सा लिया।

हालांकि, अधिकांश प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहे, लेकिन पेरिस, ल्योन, मार्सिले, बोर्डो और लिमोज जैसे शहरों में हालात बिगड़ गए। कुछ स्थानों पर प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर वस्तुएं फेंकीं, आगजनी और तोड़फोड़ की घटनाएं हुईं। पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित करने के लिए आंसू गैस और पानी की बौछारों का सहारा लिया।

एपी के अनुसार, हिंसा के सिलसिले में करीब 400 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

महंगाई और शिक्षा व्यवस्था से नाराजगी

प्रदर्शनकारियों की प्रमुख मांगों में बढ़ती जीवन-यापन लागत पर नियंत्रण, बेहतर वेतन, पेंशन व्यवस्था में सुधार और सार्वजनिक शिक्षा सेवाओं की स्थिति में बदलाव शामिल हैं।

छात्र संगठनों और श्रमिक संघों ने भी इन प्रदर्शनों का समर्थन किया। छात्रों का कहना है कि शिक्षा से जुड़ी बढ़ती लागत और संस्थानों में संसाधनों की कमी के कारण उच्च शिक्षा तक पहुंच कठिन होती जा रही है।

प्रदर्शनों में शामिल लोगों ने सरकार की उन नीतियों पर भी सवाल उठाए, जिन्हें वे आर्थिक रूप से संपन्न वर्ग के पक्ष में मानते हैं। इस आंदोलन को 2018 के 'येलो वेस्ट' आंदोलन से भी जोड़ा जा रहा है, जिसने फ्रांस में ईंधन की कीमतों और आर्थिक असमानता के मुद्दे पर व्यापक विरोध को जन्म दिया था।

सरकार के सामने बढ़ी चुनौती

प्रदर्शनों के दौरान हुई हिंसा ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने और नागरिकों के विरोध के अधिकार के बीच संतुलन बनाने की चुनौती को फिर सामने ला दिया है। पुलिस की कार्रवाई और सार्वजनिक संपत्तियों को हुए नुकसान को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं।

फ्रांस में जारी यह असंतोष केवल महंगाई तक सीमित नहीं है, बल्कि रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा और सरकारी खर्च जैसे व्यापक मुद्दों से जुड़ा हुआ है।

आने वाले दिनों में सरकार की प्रतिक्रिया और प्रदर्शनकारी संगठनों की रणनीति यह तय करने में अहम होगी कि आंदोलन शांत होता है या और व्यापक रूप लेता है।

'ट्रम्प की बात नहीं मानेंगे!'

रूसी रिफाइनरियों पर हमले रहेंगे जारी, अमेरिका को भी खरी-खोटी



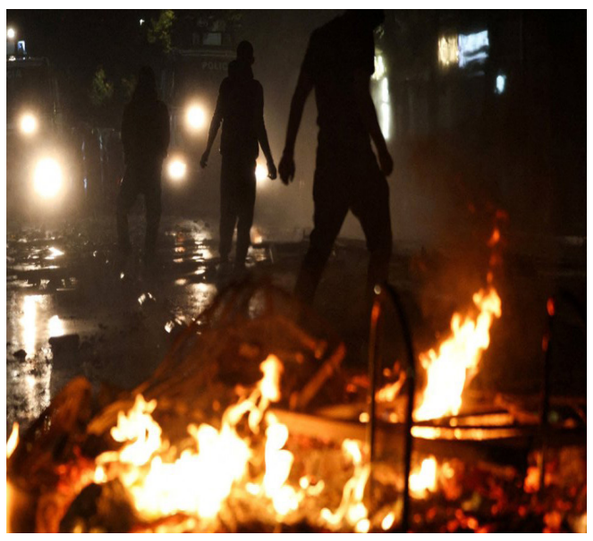
रूस: यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने स्पष्ट कर दिया है कि वे रूस की तेल रिफाइनरियों पर हमले रोकने के अमेरिकी दबाव के आगे नहीं झुकेंगे।

ज़ेलेंस्की ने दो टूक कहा है कि वे इस मामले में डोनाल्ड ट्रम्प की बात बिल्कुल नहीं मानेंगे। उनका तर्क है कि रूस इन्हीं रिफाइनरियों की कमाई से अपने युद्ध की फंडिंग कर रहा है, इसलिए रूस को आर्थिक चोट पहुंचाना यूक्रेन की सैन्य रणनीति का अहम हिस्सा है और यह हमले जारी रहेंगे।

हाल ही में अमेरिका ने चिंता जताई थी कि रूसी ऊर्जा संयंत्रों पर हमलों से वैश्विक तेल कीमतों में भारी उछाल आ सकता है। इस चिंता को सिरे से खारिज करते हुए ज़ेलेंस्की ने अमेरिका द्वारा रूस से डीजल खरीदने के फैसले को भी पूरी तरह गलत ठहराया।

उन्होंने कड़े शब्दों में कहा कि एक तरफ अमेरिका यूक्रेन की मदद कर रहा है, तो दूसरी तरफ रूस से ऊर्जा खरीदकर अनजाने में व्लादिमीर पुतिन के युद्ध तंत्र को आर्थिक ताकत भी दे रहा है। ज़ेलेंस्की के अनुसार, अमेरिका के ऐसे विरोधाभासी कदमों से यह युद्ध और लंबा खिंचेगा।

महंगी शिक्षा पर संग्रामः अल्बानिया में छात्रों का उग्र प्रदर्शन, 11 देशों तक फैली विरोध की आंच



अल्बानिया : शिक्षा के लगातार बढ़ते व्यवसायीकरण और आसमान छूती फीस के खिलाफ अल्बानिया में छात्रों का गुस्सा अब हिंसक रूप ले चुका है।

महंगी शिक्षा के विरोध में हजारों छात्र सड़कों पर उतर आए हैं। आक्रोशित प्रदर्शनकारियों ने राजधानी और अन्य प्रमुख शहरों में जमकर बवाल काटा, जिसके तहत कई सरकारी इमारतों और बैंकों को आग के हवाले कर दिया गया।

लंबे समय से अल्बानियाई छात्र संगठन सरकार से शिक्षा के बजट में वृद्धि और ट्यूशन फीस में भारी कटौती की मांग कर रहे थे। छात्रों का आरोप है कि उच्च शिक्षा अब आम आदमी की पहुंच से बाहर होती जा रही है, जो सीधे तौर पर उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ है। लेकिन, सरकार की लगातार अनदेखी और संवादहीनता ने इस असंतोष को एक उग्र आंदोलन में बदल दिया। सड़कों पर पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसक झड़पें हो रही हैं और हालात बेहद तनावपूर्ण बने हुए हैं।

हालांकि, छात्रों का यह आक्रोश केवल अल्बानिया तक ही सीमित नहीं है। यह एक वैश्विक चिंता का विषय बनता जा रहा है। वर्तमान में दुनिया के 11 अलग-अलग देशों में छात्र विभिन्न मुद्दों को लेकर सड़कों पर आंदोलन कर रहे हैं।

कहीं महंगी शिक्षा, तो कहीं बढ़ती बेरोजगारी और छात्र-विरोधी सरकारी नीतियों के खिलाफ युवा लामबंद हो रहे हैं।

यह स्थिति इस बात का स्पष्ट संकेत है कि दुनियाभर में युवा अपने भविष्य और बुनियादी हकों के प्रति अब चुप बैठने को तैयार नहीं हैं। अल्बानिया सरकार के सामने अब सबसे बड़ी चुनौती इस उग्र विरोध को जल्द शांत कर छात्रों की जायज मांगों का स्थायी समाधान निकालने की है, अन्यथा यह व्यवस्थागत संकट और अधिक गहरा सकता है।

व्यापारः-व्यवसायः

निवेश का महा-मौका

21 अक्टूबर से खुल रहा है देश का सबसे बड़ा 'जियो आईपीओ', टूटेगा हुंडई और एलआईसी का रिकॉर्ड



नई दिल्ली। मुकेश अंबानी के नेतृत्व वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज की डिजिटल और टेलीकॉम कंपनी, जियो प्लेटफॉर्म्स, भारत का अब तक का सबसे बड़ा आईपीओ (IPO) लेकर आ रही है। कंपनी इस पब्लिक इश्यू की ऊपरी कीमत के आधार पर बाजार से 30,213 करोड़ रुपये जुटाएगी।

आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए 21 अक्टूबर को खुलेगा और 23 अक्टूबर को बंद होगा, वहीं शेयरों की लिस्टिंग 28 अक्टूबर को होने की संभावना है। कंपनी ने आईपीओ के लिए 1,065 रुपये से 1,119 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया है, जिसमें खुदरा निवेशकों को न्यूनतम 13,428 रुपये का निवेश करना होगा।

इसके अलावा, कर्मचारियों के लिए 500 करोड़ रुपये तक का कोटा आरक्षित है और उन्हें प्रति शेयर 54 रुपये की छूट मिलेगी। शेयरधारकों के लिए भी 2,500 करोड़ रुपये तक का कोटा तय किया गया है। 30,213 करोड़ रुपये का यह इश्यू देश के 3 सबसे बड़े आईपीओ की सूची में शीर्ष पर है। यह 2024 में आए हुंडई मोटर (27,859 करोड़ रुपये) के आईपीओ से 8% और 2022 में आए एलआईसी (20,557 करोड़ रुपये) के आईपीओ से 47% बड़ा है, जिससे यह उनका रिकॉर्ड तोड़ेगा।

जियो का यह आईपीओ दूसरों से इसलिए अलग है क्योंकि हुंडई और एलआईसी के आईपीओ में मौजूदा शेयरधारकों ने अपनी हिस्सेदारी बेची थी, जबकि इसके उलट जियो 10 रुपये की फेस वैल्यू वाले सभी 27 करोड़ नए शेयर जारी करेगी।

इस आईपीओ से जुटाई गई रकम से कंपनी अपने कारोबार का विस्तार करेगी और कर्ज घटाएगी।

कंपनी की मौजूदा स्थिति की बात करें तो आईपीओ से पहले जियो में रिलायंस की 66.43% हिस्सेदारी है, जबकि मेटा व गूगल की संयुक्त हिस्सेदारी 17.7% है। वित्तीय मोर्चे पर भी 2025-26 में जियो का शुद्ध मुनाफा 15.1% बढ़कर 30,049 करोड़ रुपये हो गया है।

मस्क के आरोपों के बाद रिलायंस ने पहली बार दिया सीधा जवाब, मित्तल और सरकार भी मैदान में

भारत में सैटकॉम पर घमासानः स्टारलिंक बोला, "सभी सरकारी अनुमतियों के साथ तैयार"; रिलायंस ने कहा, "कानून सबके लिए बराबर"

● कार्तिका गोथवाल



नई दिल्ली। भारत के सैटेलाइट इंटरनेट बाज़ार को लेकर छिड़ा विवाद शुक्रवार को और तेज़ हो गया। स्टारलिंक ने कहा कि वह पाँच साल से अधिक समय से भारतीय नियामकों, उद्योग और ऑपरेटरों के साथ काम कर रही है और देश में समर्पित ढाँचा खड़ा कर चुकी है, "वह भी सभी आवश्यक सरकारी अनुमतियों के साथ।" एलन मस्क की अगुवाई वाली कंपनी ने भारत में हाई-स्पीड इंटरनेट सेवा देने की अपनी तैयारी का भी दावा किया।

स्टारलिंक ने X पर अपनी पोस्ट में रिलायंस इंडस्ट्रीज़ के उस बयान को टैग किया, जो शुक्रवार को ही पहले जारी हुआ था। मुकेश अंबानी की अगुवाई वाली रिलायंस ने उसमें कहा था कि वह स्टारलिंक समेत सैटेलाइट संचार में प्रतिस्पर्धा का स्वागत करती है, लेकिन सभी कंपनियों को भारतीय कानूनों का पालन करना होगा।

स्टारलिंक ने X पर लिखा, "हमने भारत में 5 साल से अधिक समय तक नियामकों, उद्योग और ऑपरेटरों के साथ मिलकर काम किया है। भारतीय ट्रैफ़िक को सुरक्षित और संरक्षित ढंग से संभालने के लिए देश के भीतर ही समर्पित सिस्टम, गेटवे और अन्य बुनियादी ढाँचा बनाया है, और यह सब आवश्यक सरकारी अनुमतियों के साथ किया गया है।"

रिलायंस: "हमने कभी प्रतिस्पर्धा से डर नहीं माना"

मस्क की हालिया तीखी टिप्पणियों पर अपनी पहली सीधी प्रतिक्रिया में रिलायंस ने कहा कि वह "तथ्यों को रिकॉर्ड पर रख रही है।" कंपनी ने कहा, "रिलायंस में हमने कभी प्रतिस्पर्धा से डर नहीं माना। हम इसे इस बात की सबसे सच्ची कसौटी मानते हैं कि ग्राहक की सबसे अच्छी सेवा कौन करता है।"

अपने रुख के समर्थन में रिलायंस ने जियो का उदाहरण दिया। उसने कहा कि जियो ने 2016 में भीड़ भरे टेलीकॉम बाज़ार में सबसे नए खिलाड़ी के रूप में, बिना किसी ग्राहक के, क़दम रखा था।

महज़ दस साल में उसने 53 करोड़ से अधिक ग्राहकों का भरोसा जीता और भारतीयों को दुनिया के बेहतरीन डिजिटल ढाँचे और सबसे सस्ते डेटा में से कुछ उपलब्ध कराए।

रिलायंस के बयान में कहा गया, **"हम स्टारलिंक सहित सैटेलाइट संचार में प्रतिस्पर्धा का स्वागत करते हैं। जियो समेत हर खिलाड़ी को भारत के लोगों की सेवा करनी चाहिए और देश के कानूनों और नीतियों का पालन करना चाहिए।"**

कंपनी ने कहा कि निवेश और नवाचार के प्रति भारत का खुलापन, चाहे वह देशी हो या विदेशी, कानून के शासन पर टिका है। उसने यह भी कहा कि सरकार हर आवेदक पर, भारतीय हो या विदेशी, एक ही प्रक्रिया लागू करती है, और **"जियो की अपनी सैटेलाइट सेवाएँ भी मंज़ूरियों का इंतज़ार कर रही हैं।"**

सरकार: कानून नहीं मानेंगे तो कारोबार नहीं

स्टारलिंक और मस्क के दावों से उठे विवाद पर सरकारी सूत्रों ने दोहराया कि भारत में काम करने वाली हर कंपनी को देश के कानून का पालन करना होगा।

उनके मुताबिक़ केंद्र का रुख़ शुरू से स्पष्ट और एक समान रहा है। सूत्रों ने इस सप्ताह कहा था, **"सरकार का रुख़ बहुत स्पष्ट रहा है, और आवेदन के समय भी यही था कि अगर आप भारतीय कानूनों का पालन नहीं करते, तो आप यहाँ कारोबार नहीं कर सकते।"**

मित्तल: **"मैं कतार में उनसे काफ़ी आगे"**

ब्लूमबर्ग न्यू इकोनॉमी फ़ोरम 2026 में भारती एयरटेल के चेयरमैन सुनील मित्तल ने कहा कि उनकी सैटेलाइट कंपनी यूटेलसैट वनवेब सेवाएँ शुरू करने की कतार में स्टारलिंक से काफ़ी आगे है।

मित्तल ने कहा, **"मैंने पाँच साल पहले आवेदन किया था। हमारे पास अनुमति नहीं है, इसलिए हमें बहुत ख़ुशी होगी अगर हमें उनसे कम से कम कुछ दिन पहले मिल जाए।"**

उन्होंने बताया कि वनवेब का ग्राउंड नेटवर्क तीन साल से तैयार है और उसके उपग्रह पाँच साल से भारत के ऊपर चक्कर लगा रहे हैं, फिर भी व्यावसायिक संचालन की अनुमति का इंतज़ार है।

मस्क के आरोप, मंत्रालय का खंडन मित्तल और अब रिलायंस की प्रतिक्रिया दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति मस्क के उस आरोप के बाद आई है, जिसमें उन्होंने शक्तिशाली कारोबारी हितों पर स्टारलिंक का रास्ता रोकने की बात कही थी। X पर कई पोस्ट में मस्क ने मुकेश अंबानी को व्यंग्य में "प्रधानमंत्री अंबानी" कहा और पूछा कि क्या भारत के फ़ैसलों में उनका असर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी ज़्यादा है।

मस्क ने यह भी आरोप लगाया कि कुछ कारोबारी समूह भारतीय उपभोक्ताओं पर अपनी "एकाधिकारवादी जकड़" बनाए रखना चाहते हैं।

संचार मंत्रालय ने इन आरोपों को "निराधार और भ्रामक" बताकर खारिज कर दिया। सरकार ने कहा कि वाणिज्यिक सेवाएँ शुरू करने से पहले सभी सैटेलाइट ऑपरेटरों को सुरक्षा शर्तों और स्पेक्ट्रम आवंटन नियमों समेत समान नियामकीय आवश्यकताएँ पूरी करनी होंगी।

संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के अनुसार, स्टारलिंक, रिलायंस की जियो सैटकॉम और भारती समर्थित यूटेलसैट वनवेब, इन तीनों को सैटेलाइट संचार लाइसेंस मिल चुके हैं। अमेज़न के प्रोजेक्ट कुइपर ने रुचि दिखाई है, पर उसे तय प्रक्रिया से गुज़रना होगा।

शिक्षा और उद्यम का संगम, लाखों युवाओं का भविष्य संवार रहीं प्राची जैन

● शिवम शुक्ला

भोपाल- संसाधन सीमित हों और राहें मुश्किल लगें, तो हौसलों की उड़ान ही नई मंजिलें तय करती है। मध्य प्रदेश के एक छोटे से गाँव धूमा से निकलकर लाखों विद्यार्थियों के करियर को दिशा देने वाली और 'कलाकृति भोपाल' के जरिए उद्यमिता की दुनिया में अपनी पहचान बनाने वाली प्राची जैन की कहानी एक ऐसी ही बेमिसाल दास्तान है।

एक शिक्षिका,एक डिजिटल मेंटर और एक सफल उद्यमी के रूप में प्राची का यह सफर साबित करता है कि अगर उद्देश्य सही हो, तो सीमित संसाधनों से भी बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं। प्राची जैन ने अपने जीवन के अनछुए पहलुओं को साझा किया, जो हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा है, जो अपने सपनों को सच करना चाहता है:

अभावों को नहीं बनने दी अपनी सीमा

प्राची की कहानी मध्य प्रदेश के गाँव धूमा से शुरू होती है। आठवीं तक की शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर से प्राप्त करने के बाद, अंग्रेजी माध्यम या निजी स्कूल न होने के कारण उन्होंने सरकारी स्कूल का रुख किया।

शिक्षकों और संसाधनों की कमी के बावजूद उन्होंने इसे अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। माता-पिता के अटूट सहयोग से उन्होंने कंप्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग पूरी की। इंजीनियरिंग के बाद उनके पास आईटी कंपनी में नौकरी का विकल्प था, लेकिन वे कुछ ऐसा करना चाहती थीं जिससे वे समाज और दूसरों के जीवन में सीधा योगदान दे सकें।

शिक्षण का जुनून: 12 घंटे की मेहनत और समर्पण

इंजीनियरिंग के बाद उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र को चुना और 'महेंद्र इंस्टीट्यूट' से रीजनिंग व एरीट्यूड पढ़ाने की शुरुआत की।

यह वह दौर था जब प्राची सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक, साल के 365 दिन विद्यार्थियों को पढ़ाती थीं। नागपुर, बिलासपुर, जबलपुर और भोपाल जैसे शहरों में उन्होंने विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया। किसी भी विद्यार्थी के चयन पर उन्हें जो खुशी मिलती थी, उसने उन्हें इस पेशे से भावनात्मक रूप से जोड़ दिया।

संघर्ष के बाद नई शुरुआत

जिंदगी में कुछ ऐसी परिस्थितियां भी आईं जब उन्हें अपना काम छोड़ना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। जबलपुर में 'Adda247 (Career Power)' के साथ उन्होंने दोबारा शुरुआत की।

इसी बीच उनकी शादी कबिश जैन से हुई और वे भोपाल आ गईं। जीवन की नई जिम्मेदारियों के साथ भोपाल में उन्होंने Career Launcher, Perfect Coaching और Physics Wallah जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में अपनी सेवाएँ दीं और बैंकिंग, SSC से लेकर CAT, CLAT जैसी परीक्षाओं के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

समस्या की पहचान और 2.38 लाख विद्यार्थियों का कारवां

सालों पढ़ाने के बाद प्राची ने महसूस किया कि विद्यार्थियों की सबसे बड़ी समस्या सिर्फ परीक्षा की तैयारी नहीं, बल्कि सही जानकारी और 'अवसरों' का अभाव है। इसी सोच के साथ उन्होंने सोशल मीडिया को अपना माध्यम बनाया और भर्तियों, योग्यताओं व आवेदन प्रक्रियाओं की सही जानकारी देना शुरू किया।

आज उनके इस प्लेटफॉर्म से 2.38 लाख से अधिक विद्यार्थी जुड़े हुए हैं। उनके लिए यह सिर्फ एक संख्या नहीं, बल्कि युवाओं का वह अटूट विश्वास है, जिसके बल पर कई छात्र आज सरकारी और निजी संस्थानों में अपनी जगह बना चुके हैं।

नि:शुल्क शिक्षा और उसूलों से समझौता नहीं

प्राची का मानना है कि शिक्षा केवल उन तक सीमित नहीं रहनी चाहिए जो इसका भुगतान कर सकते हैं।

उन्होंने समय-समय पर नि:शुल्क कक्षाएं लेकर जरूरतमंद विद्यार्थियों की मदद की। सोशल मीडिया पर एक क्रिएटर होने के नाते उन्हें कई भ्रामक विज्ञापनों और प्रमोशन के ऑफर भी मिले, लेकिन उन्होंने विद्यार्थियों के विश्वास को पैसों से ऊपर रखा और हमेशा गलत जानकारियों से दूरी बनाए रखी।

'कलाकृति भोपाल' – रचनात्मकता से उद्यमिता का सफर

एक शिक्षिका होने के साथ-साथ प्राची ने अपनी रचनात्मकता को भी उड़ान दी। उन्होंने अपना स्टार्टअप 'कलाकृति भोपाल' शुरू किया है। इसके अंतर्गत वे फेस्टिवल डेकोरेशन, ट्रूसो पैकिंग, और हैंडमेड कस्टमाइज्ड प्रोडक्ट्स तैयार करती हैं। यह स्टार्टअप उनके हुनर और कुछ नया करने के साहस का परिचायक है।

भविष्य का लक्ष्य और संदेश

प्राची का मानना है कि सफलता का अर्थ केवल खुद आगे बढ़ना या पैसा कमाना नहीं है, बल्कि अपनी मेहनत से दूसरों के लिए रास्ते बनाना है। उनका संदेश है– "शुरुआत चाहे जैसी भी परिस्थितियों में हो, अपनी क्षमताओं को पहचानें और लगातार सीखते रहें। जब तक मेरे प्रयास किसी एक विद्यार्थी के जीवन में भी सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं, तब तक यह सफर अनवरत जारी रहेगा।"



समाज सेवा, गौ-सेवा और महिला सशक्तिकरण की एक अमिट मिसाल - श्रीमती अनुजा प्रशांत पंडित



● प्रकाश त्रिपाठी

इंदौर: समाज में जब कोई मातृशक्ति निस्वार्थ सेवा और समर्पण का संकल्प लेती है, तो वह पूरे समाज की दिशा और दशा बदल देती है।

इंदौर के राऊ विधानसभा क्षेत्र की जुझारू नेत्री श्रीमती अनुजा प्रशांत पंडित एक ऐसा ही नाम हैं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र, धर्म और समाज के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया है।

वर्तमान में वे भारतीय जनता पार्टी की मंडल मंत्री (छत्रपति संभाजी महाराज मंडल), प्रधानमंत्री जनजागरण अभियान महिला मोर्चा (इंदौर) की शहर उपाध्यक्ष और श्रीमंत बाजीराव पेशवा समिति की उपाध्यक्ष के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण दायित्व निभा रही हैं।

पिता से मिले संस्कार और राष्ट्र सेवा का श्रीगणेश:

मध्य प्रदेश के धार में जन्मीं अनुजा जी को सामाजिक दायित्वों और देश सेवा की गहरी प्रेरणा अपने पिता श्री रमेशचंद्र देशपांडे जी (सेवानिवृत्त शासकीय कर्मचारी) से मिली। विद्यार्थी काल से ही उन्होंने राष्ट्रीय सेविका समिति के प्रथम और द्वितीय वर्ग को पूर्ण कर देश सेवा की ओर अपने मजबूत कदम बढ़ा दिए थे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी वे हमेशा अग्रणी रहीं; उन्होंने वाणिज्य स्नातक और वाणिज्य स्नातकोत्तर (प्रथम श्रेणी) की शिक्षा पूर्ण की और इसके बाद हिंदी साहित्य में कला स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।

महाविद्यालय के दिनों में उनके अंदर का नेतृत्व कौशल उभर कर सामने आया। वे छात्र संगठन की उपाध्यक्ष रहीं और बाद में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की नगर उपाध्यक्ष के रूप में सशक्त नेतृत्व का परिचय दिया। समाज के निचले तबके तक शिक्षा का प्रकाश पहुंचाने के लिए उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देने वाले "पढ़ना-बढ़ना आंदोलन" का भी बहुत ही सफल क्रियान्वयन किया।

धर्म रक्षा, गौ-सेवा और अनाथों की सेवा में संघर्ष:

अनुजा जी का स्पष्ट मानना है कि धर्म और देश की रक्षा गौ-सेवा के बिना अधूरी है। इसी आदर्श को आत्मसात करते हुए उन्होंने धार स्थित 'श्री लक्ष्मी गौशाला' में पूर्ण निस्वार्थ भाव से अपने ताऊजी स्व. श्री राजेंद्र देशपांडे जी के साथ गौ-सेवा की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अनाथ आश्रम और वृद्धाश्रम में भी अपनी अनवरत सेवाएं दीं।

राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले धार के प्रसिद्ध 'भोजशाला मुक्ति आंदोलन' में भी उन्होंने इंकलाब की प्रबल भावना के साथ एक अत्यंत सक्रिय और साहसिक भूमिका निभाई।

'संस्था वाघिणी' से बदल रही हैं महिलाओं व बच्चों का जीवन:

समाज में ठोस बदलाव लाने के उद्देश्य से श्रीमती अनुजा पंडित ने 'संस्था वाघिणी' की स्थापना की, जिसका सफल संचालन वे वर्ष 2012 से लगातार कर रही हैं। इस संस्था के माध्यम से वे कमजोर बस्तियों में जाकर महिलाओं का मार्गदर्शन करती हैं और उन्हें स्वरोजगार अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करती हैं।

वर्तमान के आधुनिक युग में तकनीकी क्रांति के साथ कदम मिलाते हुए, यह संस्था घर पर व्यापार, व्यवसाय, कुटीर उद्योग, खाद्य सामग्री एवं अन्य जीवनोपयोगी उत्पादों का निर्माण व बिक्री कर रही महिलाओं को एक विस्तृत मंच उपलब्ध करा रही है।

उनके साक्षात्कारों के माध्यम से उन्हें एक नई पहचान दी जा रही है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत हो रही है।

ऐसे बहुत से प्रकल्प 'संस्था वाघिणी' के माध्यम से अविरल चल रहे हैं, जिनसे महिलाओं का आर्थिक, मानसिक और सर्वांगीण विकास हो सके।

इसके साथ ही, धर्मांतरण पर रोक लगाने और समाज के आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों की शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करने के लिए उनकी संस्था द्वारा धरातल पर निरंतर कार्य किया जा रहा है।

जनसेवा और सांस्कृतिक उत्थान का अटूट संकल्प:

कोरोना जैसी भीषण और भयावह महामारी के दौरान जब हर कोई घरों में कैद था, तब अनुजा जी पीछे ना हटते हुए सड़कों पर उतरीं और जरूरतमंदों के लिए भोजन सामग्री व व्यवस्थापन में अपनी अहम भूमिका निभाई।

इसके अलावा, आम जनता के नए मतदाता पहचान पत्र बनवाना, आयुष्मान पत्र बनवाना तथा संस्कार भारती के रंगोली प्रशिक्षण शिविर एवं 'सनातन संस्कार कार्यशाला' जैसे सांस्कृतिक आयोजनों को बढ़ावा देने में भी वे हमेशा सबसे आगे रहती हैं।

गौ-शालाओं की निस्वार्थ सेवा से लेकर कमजोर बस्तियों के उत्थान तक, श्रीमती अनुजा पंडित की यह अविराम यात्रा मातृशक्ति के सशक्तिकरण का एक अत्यंत अप्रतिम और गौरवशाली उदाहरण है।

'चरैवेति-चरैवेति' (चलते रहो-चलते रहो) के सिद्धांत पर आधारित उनका यह संघर्षशील जीवन समाज के लिए एक सच्ची प्रेरणा है और 'स्त्रीरत्न' की परिभाषा को पूरी तरह से सार्थक करता है।

विविध संवाद:

गुलमर्ग परिसर में सजा 'गुलमर्ग की महारानी' का भव्य दरबार: आस्था, सनातन संस्कृति और एकजुटता का बना अनूठा संगम



● प्रकाश त्रिपाठी

इंदौर: जब आस्था दिलों में गहराई तक उतरती है, जब भक्ति हर घर की सर्वोच्च पहचान बन जाती है और जब पूरा समाज माँ भगवती के चरणों में एक साथ नतमस्तक होता है, तब जन्म लेता है एक ऐसा उत्सव, जो केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि भावनाओं और संस्कारों का महापर्व बन जाता है।

इसी असीम श्रद्धा, उल्लास और सनातन संस्कृति के गौरव के साथ गुलमर्ग परिसर के रहवासियों ने इस वर्ष नवरात्रि के पावन पर्व को अत्यंत भव्यता के साथ मनाया।

यहाँ पूरे विधि-विधान के साथ 'गुलमर्ग की महारानी' के नाम से माता का भव्य दरबार सजाया गया, जहाँ माँ दुर्गा की मनमोहक प्रतिमा विराजीं। माँ दुर्गा के इस दरबार ने नौ दिनों तक पूरे परिसर में अभूतपूर्व उत्साह और आनंद का वातावरण निर्मित किए रखा।

यहाँ नवरात्रि का पर्व केवल नौ दिनों की पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह माँ के प्रति अटूट विश्वास, परिवारों के आपसी प्रेम और समाज की एकजुटता का एक सशक्त प्रतीक बन गया है।

'गुलमर्ग की महारानी' का नाम अपने आप में असीम श्रद्धा, सम्मान और गौरव की अनुभूति कराता है। इस शक्ति पर्व के दौरान हर दिन पूरा परिसर माँ की आरती और गरबा की सुमधुर धुनों से गूंजता रहा।

इस महोत्सव की सबसे बड़ी विशेषता निवासियों की वह आत्मीय भावना रही, जिसने सभी को एक वृहद परिवार की तरह जोड़ दिया।

आयोजन की शुरुआत से लेकर प्रतिदिन की व्यवस्था तक, हर कार्य को रहवासियों ने आपसी सहयोग और पूर्ण सद्भावना के साथ संपन्न किया। बच्चों की उमंग, युवाओं का अदम्य उत्साह, महिलाओं की अगाध श्रद्धा और वरिष्ठजनों का आशीर्वाद मिलकर इस आयोजन को ऐतिहासिक बना गए।

यह आयोजन सनातन संस्कृति के उस मूल मंत्र का जीवंत उदाहरण है, जो हमें एकता, सहयोग और भाईचारे की शिक्षा देता है।

माँ के दरबार में हर श्रद्धालु ने अपनी मनोकामना रखी और माँ के आशीर्वाद से सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना की। महाष्टमी और महानवमी के पावन अवसर पर माता की विशेष महाआरती एवं हवन किया गया, तथा देवी को महाप्रसादी का विशेष भोग अर्पित किया गया। इसके पश्चात बिना किसी भेदभाव के सभी रहवासियों ने एक साथ पंगत में बैठकर माता की महाप्रसादी ग्रहण की।

इसी अपार श्रद्धाभाव के साथ सभी रहवासियों ने उत्सव के समापन पर एकजुट होकर यह पवित्र संकल्प भी लिया कि माता रानी की असीम कृपा से वे भविष्य में भी इसी प्रकार मिलजुलकर कार्य करते रहेंगे और प्रतिवर्ष इसी भव्यता और उल्लास के साथ यह उत्सव मनाएंगे।

गुलमर्ग परिसर का यह नवरात्रि महोत्सव समाज को यह सशक्त संदेश दे रहा है कि जहाँ माँ की सच्ची भक्ति होती है, वहाँ एकता की असीम शक्ति होती है।

माँ दुर्गा के चरणों में पूर्णत: समर्पित यह आयोजन श्रद्धा और उच्च संस्कारों की एक ऐसी अमिट छाप छोड़ रहा है, जिसे हर श्रद्धालु अपने हृदय में सदैव संजोकर रखेगा।

इस पुनीत और निर्विघ्न कार्य में सहभागी बनने वाले और एक-दूसरे का सहयोग करने वाले सभी रहवासियों का बहुत-बहुत धन्यवाद एवं साधुवाद।

जय माता दी!

शक्ति भी माँ, भक्ति भी माँ — हमारी गुलमर्ग की महारानी।



देश दर्पण संवाद | साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र | पंजीयन संख्या : MPHIN/26/A6588 प्रकाशक : असीत पाठक, 25, गोयल ग्रीन कॉलोनी, निपानिया, पोस्ट ऑफिस–विजय नगर, इंदौर, मध्य प्रदेश–452010 की ओर से स्वामी असीत पाठक के द्वारा प्रकाशित। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा।
संपादक : असीत पाठक। मुद्रक : पूनम विश्वकर्मा, विश्वकर्मा प्रिंटिंग प्रेस, H. No. 51/1, Village–Padri, Post Office–Gondwali, Block & Tehsil–Waidhan, Singrauli, Madhya Pradesh–486892 से मुद्रित। प्रकाशन स्थल : इंदौर, मध्य प्रदेश।